नवसर्जन संस्कृति

RNI No. GJHIN/25/A2786
NAVSARJAN SANSKRUTI

नवसर्जन संस्कृति

अहमदाबाद से प्रकाशित दैनिक

वर्ष : 01
अंक : 128
दि. 10.02.2026,
मंगलवार
पाना : 04
किंमत : 00.50 पैसा

महाराष्ट्र के जनादेश में महायुति का परचम, ग्रामीण सत्ता से लेकर सियासी संदेश तक बदली तस्वीर

महाराष्ट्र की राजनीति में जिला परिषद चुनावों के नतीजों ने एक बार फिर यह साफ कर दिया है कि सत्ता की असली नब्ज आज भी गांवों और कस्बों में धड़कती है। 'मिनी मंत्रालय' कहे जाने वाले जिला परिषद चुनावों में सत्ताधारी महायुति ने ऐसा व्यापक और निर्णायक प्रदर्शन किया है, जिसने न सिर्फ विपक्ष की रणनीतियों पर सवाल खड़े किए हैं, बल्कि आने वाले वर्षों की राजनीतिक दिशा भी काफी हद तक तय कर दी है। 12 जिला परिषदों की कुल 731 सीटों में से 552 सीटों पर जीत दर्ज कर महायुति ने यह संदेश दिया है कि गठबंधन की राजनीति, अगर जमीनी मुद्दों और संगठनात्मक मजबूती के साथ चले, तो वह जनादेश में तब्दील हो सकती है। अब तक घोषित 714 सीटों के नतीजों में भारतीय जनता पार्टी 225 सीटों के साथ सबसे बड़ी पार्टी बनकर उभरी है, जबकि अजित पवार के नेतृत्व वाली राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी ने 172 सीटों पर कब्जा कर दूसरा स्थान हासिल किया है। शिवसेना के शिंदे गुट ने भी 162 सीटें जीतकर शतक से कहीं आगे निकलते हुए अपनी मजबूत मौजूदगी दर्ज कराई है।

इन नतीजों का सबसे बड़ा राजनीतिक संकेत यह है कि महाराष्ट्र के ग्रामीण और अर्ध-शहरी इलाकों में मतदाताओं ने स्थिरता, विकास और सत्ता में साझेदारी वाले मॉडल को तरजीह दी है। वहीं शिवसेना के उद्धव ठाकरे गुट के लिए यह चुनाव किसी बड़े झटके से कम नहीं रहा, क्योंकि उन्हें महज 46 सीटों पर ही संतोष करना पड़ा। कांग्रेस को 55 सीटें मिलीं, शरद पवार गुट की राष्ट्रवादी कांग्रेस 21 सीटों पर सिमट गई और अन्य दलों व निर्दलीयों के खाते में 33 सीटें गईं। यह आंकड़े केवल जीत-हार का गणित नहीं बताते, बल्कि यह भी दिखाते हैं कि राज्य की राजनीति में कौन-सी धार मजबूत हो रही है और कौन-सी कमजोर पड़ती जा रही है। महायुति की इस जीत पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की प्रतिक्रिया भी उसी आत्मविश्वास को दर्शाती है, जो इन नतीजों से झलकता है। उन्होंने महाराष्ट्र की जनता का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि म्युनिसिपल कॉर्पोरेशन, म्युनिसिपल काउंसिल और अब जिला परिषद चुनावों में मिले जनादेश से यह स्पष्ट है कि राज्य के लोग सुशासन और ऐसी सरकार चाहते हैं, जो महाराष्ट्र की

गौरवशाली संस्कृति और विकास की आकांक्षाओं के अनुरूप काम करे। प्रधानमंत्री के इस बयान को केवल औपचारिक धन्यवाद के रूप में नहीं, बल्कि एक राजनीतिक संकेत के रूप में भी देखा जा रहा है कि केंद्र और राज्य की सत्ता के बीच तालमेल को जनता ने स्वीकार किया है।

मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस ने भी इन नतीजों को ऐतिहासिक बताते हुए कहा कि भाजपा ने शहरी, अर्ध-शहरी और ग्रामीण—तीनों क्षेत्रों में खुद को सबसे बड़ी पार्टी के रूप में स्थापित किया है। उन्होंने यह भी रेखांकित किया कि 12 जिलों में 236 जिला परिषद सीटें और 125 पंचायत समितियों में 410 सीटें जीतकर पार्टी ने 2017 का रिकॉर्ड तोड़ दिया है। फडणवीस के अनुसार, यह परिणाम महायुति गठबंधन पर जनता के भरोसे की मुहर हैं और यह भरोसा आने वाले समय में और मजबूत होगा।

भाजपा प्रदेश अध्यक्ष रविंद्र चव्हाण ने इन नतीजों को मतदाताओं का स्पष्ट जनादेश बताते हुए कहा कि 12 जिला परिषदों और 125 पंचायत समितियों में भाजपा पूरे राज्य में नंबर एक पार्टी बनकर उभरी है। उनके अनुसार, 80 प्रतिशत से अधिक प्रतिनिधि महायुति से निर्वाचित हुए हैं और मतदाताओं ने नकारात्मक राजनीति को खारिज कर विकास के एजेंडे को चुना है। उन्होंने यह भी कहा कि ग्रामीण महाराष्ट्र को और अधिक सशक्त बनाने की दिशा में भाजपा की प्रतिबद्धता आगे भी जारी रहेगी। विपक्ष की ओर देखें तो कांग्रेस प्रदेश अध्यक्ष हर्षवर्धन सपकाल ने दो जिला परिषदों में सत्ता हासिल करने को पार्टी की वैचारिक मजबूती का संकेत बताया। उन्होंने यह भी कहा कि निकाय चुनाव कार्यकर्ताओं के होते हैं और कांग्रेस ने अपने संगठन को मजबूत करने के लिए अपने दम पर चुनाव लड़ा। हालांकि उन्होंने चुनाव प्रक्रिया, विशेषकर ईवीएम को लेकर सवाल भी उठाए और कुछ स्थानों पर अनियमितताओं के आरोप लगाए। इसके बावजूद यह स्पष्ट है कि कांग्रेस और शरद पवार गुट, दोनों के लिए यह चुनाव आत्ममंथन का अवसर बनकर आया है।

जिलावार नतीजों पर नजर डालें तो महाराष्ट्र की राजनीतिक विविधता और क्षेत्रीय समीकरणों की तस्वीर और साफ हो जाती है। रायगढ़ में शिवसेना 21 सीटों के साथ सबसे बड़ी पार्टी बनकर उभरी, जबकि एनसीपी और भाजपा ने भी मजबूत प्रदर्शन किया। रत्नागिरी में शिंदे गुट ने एकतरफा जीत दर्ज कर 40 सीटों पर कब्जा जमाया, जो कोकण क्षेत्र में उसकी पकड़ को दर्शाता है। सिंधुदुर्ग में भाजपा ने नितेश राणे के नेतृत्व में 27 सीटें जीतकर अपना किला मजबूत रखा।

पुणे जिला परिषद में अजित पवार गुट की राष्ट्रवादी कांग्रेस ने 73 में से 48 सीटें जीतकर राजनीतिक 'सुनामी' ला दी, जबकि भाजपा यहां अपेक्षाकृत पीछे रही। सातारा में भाजपा और एनसीपी के बीच कड़ा मुकाबला देखने को मिला, जिससे यह स्पष्ट हुआ कि महायुति के भीतर भी प्रतिस्पर्धा किस स्तर तक है। सांगली में शरद पवार गुट की वापसी ने यह दिखाया कि कुछ क्षेत्रों में महाविकास आघाड़ी की जमीन अब भी मौजूद है।

कोल्हापुर में त्रिशंकु परिणाम सामने आए, जहां किसी एक पार्टी को स्पष्ट बहुमत नहीं मिला और स्थानीय आघाड़ियों की भूमिका अहम हो गई। सोलापुर में भाजपा ने ग्रामीण वोट बैंक में अपनी पकड़ मजबूत करते हुए स्पष्ट बढ़त बनाई। छत्रपति संभाजीनगर में भाजपा और शिवसेना के संयुक्त प्रदर्शन ने मराठवाड़ा में महायुति की स्थिति को मजबूत किया। परभणी और धाराशिव में भाजपा और एनसीपी-शिंदे गुट के तालमेल का असर साफ दिखा, जबकि लातूर में कांग्रेस ने अपना पारंपरिक गढ़ बरकरार रखते हुए यह दिखाया कि कुछ क्षेत्रों में उसकी जड़ें अब भी गहरी हैं।

कुल मिलाकर, ये नतीजे केवल जिला परिषदों की सत्ता का सवाल नहीं हैं, बल्कि यह 2029 के विधानसभा चुनावों की जमीन भी तैयार कर रहे हैं। महायुति के लिए यह जीत आत्मविश्वास बढ़ाने वाली है, वहीं विपक्ष के लिए यह चेतावनी है कि बिना स्पष्ट नेतृत्व, ठोस एजेंडा और मजबूत संगठन के सत्ता की लड़ाई आसान नहीं होगी। महाराष्ट्र की राजनीति में यह जनादेश एक नई कहानी लिख रहा है—ऐसी कहानी, जिसमें गांवों की आवाज, गठबंधन की मजबूती और विकास की उम्मीदें केंद्र में हैं।

चंद्रयान-4 की तैयारी में इसरो का बड़ा कदम साउथ पोल के मॉन्स माउटन पर टिकी नजर

भारत के अंतरिक्ष अभियान में एक और ऐतिहासिक अध्याय जोड़ने की तैयारी करते हुए भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन यानी इसरो ने चंद्रयान-4 मिशन के लिए चंद्रमा पर संभावित लैंडिंग साइट की पहचान कर ली है। इसरो के वैज्ञानिकों ने चंद्रमा के रहस्यमय और वैज्ञानिक दृष्टि से बेहद महत्वपूर्ण साउथ पोल क्षेत्र के पास स्थित मॉन्स माउटन पहाड़ को इस मिशन के लिए सबसे उपयुक्त स्थान माना है। यह वही क्षेत्र है, जिसे भविष्य में चंद्र अनुसंधान का केंद्र माना जा रहा है और जहां से चंद्रमा के कई अनछुए रहस्यों से पर्दा उठ सकता है।

चंद्रमा का साउथ पोल लंबे समय से वैज्ञानिकों की दिलचस्पी का केंद्र रहा है। इसकी वजह यह है कि यहां सूर्य की रोशनी और स्थायी छाया वाले क्षेत्र एक साथ मौजूद हैं। मॉन्स माउटन लगभग 6,000 मीटर ऊंचा पहाड़ है, जिसकी चोटी अपेक्षाकृत सपाट बताई जा रही है। यही सपाट सतह किसी भी लूनर लैंडिंग के लिए सबसे अहम

शर्त होती है, क्योंकि असमान ढलान, बड़े गड्ढे और चट्टानें मिशन के लिए बड़ा खतरा बन सकती हैं। इसरो के वैज्ञानिकों का मानना है कि मॉन्स माउटन की भौगोलिक संरचना चंद्रयान-4 के सुरक्षित उतरने के लिए अनुकूल परिस्थितियां प्रदान कर सकती है।

इस लैंडिंग साइट की पहचान में चंद्रयान-2 मिशन ने अहम भूमिका निभाई है। भले ही चंद्रयान-2 का लैंडर विक्रम अपने लक्ष्य में पूरी तरह सफल नहीं हो पाया था, लेकिन उसका ऑर्बिटर आज भी चंद्रमा की परिक्रमा करते हुए बहुमूल्य डेटा भेज रहा है। इसी ऑर्बिटर पर लगे ऑर्बिटर हाई रेजोल्यूशन कैमरे की मदद से वैज्ञानिकों ने चंद्र सतह की बेहद सूक्ष्म तस्वीरें हासिल की हैं। यह कैमरा लगभग 32 सेंटीमीटर प्रति पिक्सल के रेजोल्यूशन में चंद्रमा की सतह को दिखाने में सक्षम है, जिससे छोटे-से-छोटे क्रेटर, पत्थर, ढलान और सतह की बनावट तक साफ दिखाई देती है। इन्हीं तस्वीरों के गहन अध्ययन के बाद मॉन्स माउटन क्षेत्र को प्राथमिक लैंडिंग साइट के रूप में चुना गया है।

वैज्ञानिकों के लिए यह क्षेत्र सिर्फ लैंडिंग की सुविधा के लिहाज से ही नहीं, बल्कि अनुसंधान के लिहाज से भी बेहद अहम है। माना जा रहा है कि चंद्रमा के साउथ पोल क्षेत्र में वॉटर आइस की मौजूदगी हो सकती है। अगर यह संभावना सही साबित होती है, तो भविष्य के चंद्र मिशनों और यहां तक कि मानव मिशनों के लिए यह एक गेम-चेंजर साबित हो सकता है। पानी न सिर्फ जीवन के लिए जरूरी है, बल्कि इससे ऑक्सीजन और हाइड्रोजन निकालकर ईंधन भी तैयार किया जा सकता है। यही वजह है कि दुनिया की कई अंतरिक्ष एजेंसियां चंद्रमा के साउथ पोल पर अपनी नजरें गड़ाए हुए हैं।

इसरो के वैज्ञानिकों ने इस अध्ययन को अंतरराष्ट्रीय मंच पर भी प्रस्तुत किया है। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक इस रिसर्च को लूनर एंड प्लैनेटरी साइंस कॉन्फ्रेंस 2026 में पेश किया गया, जहां दुनिया भर के वैज्ञानिक और अंतरिक्ष विशेषज्ञ मौजूद थे। इससे यह साफ संकेत मिलता है कि भारत अब चंद्र अनुसंधान में सिर्फ एक सहभागी नहीं, बल्कि दिशा तय करने वाली ताकत बनता जा रहा है। चंद्रयान-3 की ऐतिहासिक सफलता के बाद चंद्रयान-4 से अपेक्षाएं और भी बढ़ गई हैं।

हालांकि इसरो ने यह भी स्पष्ट किया है कि लैंडिंग साइट को लेकर अंतिम फैसला लॉन्च के करीब लिया जाएगा। अंतरिक्ष मिशनों में परिस्थितियां बेहद गतिशील होती हैं और आखिरी समय तक कई तकनीकी और वैज्ञानिक पहलुओं की समीक्षा की जाती है। सूर्य की रोशनी की उपलब्धता, तापमान, संचार की सुविधा और सतह की स्थिरता जैसे कई कारक अंतिम निर्णय को प्रभावित करते हैं। मॉन्स माउटन को इसलिए भी खास माना जा रहा है क्योंकि यहां अपेक्षाकृत लंबे समय तक सूर्य का प्रकाश मिलने की संभावना है, जिससे सोलर-पावर्ड उपकरणों को ज्यादा समय तक काम करने का मौका मिलेगा।

चंद्रयान-4 को भारत के दीर्घकालिक चंद्र कार्यक्रम का अहम हिस्सा माना जा रहा है। यह मिशन न केवल तकनीकी दृष्टि से चुनौतीपूर्ण होगा, बल्कि इससे चंद्रमा की संरचना, उसकी उत्पत्ति और वहां मौजूद संसाधनों को समझने में भी मदद मिलेगी। इसरो का लक्ष्य सिर्फ एक सफल लैंडिंग तक सीमित नहीं है, बल्कि वह चंद्रमा पर भविष्य की संभावनाओं की नींव रखना चाहता है।

कमजोर पड़ता पश्चिमी विक्षोभ और सूखी सर्दी की बदलती कहानी

उत्तर भारत में इस बार की सर्दी कई मायनों में अलग और चिंताजनक रही। ठंड तो महसूस हुई, लेकिन वह ठंड जो आमतौर पर बारिश, बर्फबारी और नमी के साथ आती है, इस बार नदारद रही। दिसंबर से लेकर जनवरी तक आसमान अधिकतर साफ रहा, पहाड़ों पर बर्फ की चादर पतली रही और मैदानी इलाकों में खेतों की मिट्टी सूखी दिखाई दी। मौसम विभाग के आंकड़े साफ संकेत दे रहे हैं कि इस सर्दी उत्तर भारत में वर्षा की भारी कमी दर्ज की गई है और इसके पीछे सबसे बड़ा कारण पश्चिमी विक्षोभों का कमजोर होना माना जा रहा है। मौसम विज्ञान के मानकों के अनुसार यदि औसत से 20 प्रतिशत या उससे अधिक कम बारिश होती है तो उसे वर्षा की कमी की श्रेणी में रखा जाता है, और इस बार कई राज्यों में यह कमी 50 से 70 प्रतिशत तक पहुंच गई। जम्मू-कश्मीर, लद्दाख, हिमाचल प्रदेश और उत्तराखंड जैसे पहाड़ी राज्यों में सर्दियों की पहचान मानी जाने वाली बर्फबारी इस बार बेहद सीमित रही। उत्तराखंड में बारिश के दिनों में औसत की तुलना में 67 प्रतिशत से अधिक की कमी दर्ज की गई, जो अपने आप में एक बड़ा संकेत है। यही हाल हिमाचल प्रदेश और जम्मू-कश्मीर के कई हिस्सों का रहा, जहां स्की रिजॉर्ट्स, सेब उत्पादक इलाके और ऊंचाई वाले गांव सामान्य से कहीं कम बर्फबारी के गवाह बने। मैदानी इलाकों में स्थिति और भी असामान्य रही। दिल्ली, पंजाब और हरियाणा में दिसंबर का महीना लगभग पूरी तरह सूखा बीता, जबकि आमतौर पर इसी दौरान हल्की से मध्यम बारिश और ठंडी हवाएं मौसम का मिजाज तय करती हैं। लंबे समय तक बारिश न होने से प्रदूषण की समस्या भी गंभीर बनी रही, क्योंकि हवा में मौजूद कणों को साफ करने वाली प्राकृतिक प्रक्रिया कमजोर पड़ गई।

उत्तर भारत की सर्दियों की बारिश और बर्फबारी पूरी तरह पश्चिमी विक्षोभों पर निर्भर करती है। ये विक्षोभ भूमध्य सागर और आसपास के क्षेत्रों से उठने वाले कम दबाव के सिस्टम होते हैं, जो पश्चिम से पूर्व की ओर बढ़ते हुए भारत के उत्तर-पश्चिमी हिस्सों तक पहुंचते हैं। सामान्य स्थिति में ये सिस्टम हिमालय से टकराकर पहाड़ों पर बर्फबारी और मैदानी इलाकों में बारिश का कारण बनते हैं। लेकिन इस सीजन में इन विक्षोभों की संख्या भी कम रही और जो आए भी, उनकी तीव्रता औसत से काफी कमजोर पाई गई। आंकड़ों के अनुसार दिसंबर महीने में केवल 12 पश्चिमी विक्षोभ दर्ज किए गए, जबकि सामान्यतः इनकी संख्या और प्रभाव कहीं अधिक होता है। मौसम वैज्ञानिकों का कहना है कि 2022 और 2025 जैसे हालिया वर्षों में पश्चिमी विक्षोभों की कमजोरी खास तौर पर देखने को मिली है, जिससे हिमालयी क्षेत्र और उत्तर भारत का वर्षा संतुलन बिगड़ता नजर आ रहा है।

इस असामान्य मौसम के दूरगामी प्रभाव भी सामने आने लगे हैं। पहाड़ों में कम बर्फबारी का सीधा असर नदियों के जलस्तर पर पड़ता है, क्योंकि हिमनदों और बर्फ के पिघलने से ही गर्मियों में नदियों को पानी मिलता है। यदि सर्दियों में पर्याप्त बर्फ नहीं गिरी, तो गर्मियों में जल संकट की आशंका बढ़ जाती है। इसके साथ ही कृषि पर भी इसका असर साफ दिखाई देता है। रबी की फसलों, खासकर गेहूं, सरसों और चने को सर्दियों की हल्की बारिश से नमी मिलती है, जो फसल की पैदावार के लिए बेहद जरूरी होती है। इस बार कई इलाकों में किसानों को सिंचाई पर अतिरिक्त खर्च करना पड़ा, जिससे उत्पादन लागत बढ़ने की आशंका है।

संसद की गरिमा पर उठे सवाल, पीयूष गोयल के बयान को लेकर विशेषाधिकार हनन का नोटिस

संसद सत्र के दौरान एक बार फिर कार्यपालिका और विधायिका के बीच मर्यादा को लेकर बहस तेज हो गई है। वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री पीयूष गोयल के एक बयान ने राजनीतिक हलकों में हलचल मचा दी है और इसे लेकर डीएमके सांसद तिरुचि शिवा ने राज्यसभा में विशेषाधिकार हनन का नोटिस दाखिल कर दिया है। आरोप है कि संसद सत्र चलने के बावजूद मंत्री ने भारत और अमेरिका के बीच प्रस्तावित व्यापार समझौते से जुड़ी अहम जानकारियां सदन के बाहर एक मीडिया इंटरव्यू में साझा कीं, जो संसदीय परंपराओं और विशेषाधिकारों के खिलाफ है।

सोमवार को राज्यसभा की कार्यवाही शुरू होते ही यह मुद्दा जोर-शोर से उठा। कागजात पेश किए जाने के तुरंत बाद तिरुचि शिवा ने इस मामले को सदन के संज्ञान में लाते हुए कहा कि संसद सत्र के दौरान किसी भी मंत्री द्वारा नीतिगत फैसलों या अंतरराष्ट्रीय समझौतों पर पहले मीडिया में बयान देना, संसद की सर्वोच्चता को कमतर करता है। उनका कहना था कि सदन देश की सबसे बड़ी लोकतांत्रिक संस्था है और यहां पहले जानकारी देना सरकार की जिम्मेदारी होती है। इस दलील को विपक्ष के नेता मल्लिकार्जुन खरगे का भी समर्थन मिला, जिन्होंने कहा कि यह मामला सिर्फ एक बयान तक सीमित नहीं है, बल्कि संसद की गरिमा और अधिकारों से जुड़ा हुआ है।

विपक्ष का आरोप है कि जब संसद सत्र चल रहा हो, तब किसी मंत्री को संवेदनशील और नीतिगत विषयों पर सार्वजनिक मंचों पर बोलने से बचना चाहिए। तिरुचि शिवा ने अपने नोटिस में कहा कि भारत-अमेरिका व्यापार समझौता ऐसा विषय है, जिसका सीधा असर देश की अर्थव्यवस्था,

किसानों और घरेलू उद्योगों पर पड़ता है। ऐसे में इस पर पहले संसद में चर्चा होनी चाहिए थी, न कि मीडिया के जरिए जनता तक जानकारी पहुंचाई जानी चाहिए थी। उन्होंने इसे संसदीय विशेषाधिकारों का उल्लंघन बताते हुए मामले की जांच की मांग की।

इस पूरे विवाद पर राज्यसभा के सभापति सी पी राधाकृष्णन ने संयमित प्रतिक्रिया दी। उन्होंने कहा कि विशेषाधिकार हनन के नोटिस की प्रक्रिया के तहत इस मामले की जांच की जाएगी और सभी तथ्यों को ध्यान में रखकर निर्णय लिया जाएगा। सभापति ने यह भी स्पष्ट किया कि वाणिज्य मंत्री पीयूष गोयल पहले ही इस मुद्दे पर सदन में अपना पक्ष रख चुके हैं। इसके बावजूद, शून्यकाल के दौरान विपक्षी सदस्यों ने कुछ समय तक हंगामा किया, जिससे सदन का माहौल तनावपूर्ण हो गया।

विवाद की जड़ में वह बयान है, जो पीयूष गोयल ने रविवार को एक मीडिया इंटरव्यू में दिया था। इस इंटरव्यू में उन्होंने भारत और अमेरिका के बीच संभावित व्यापार समझौते को लेकर सरकार का रुख स्पष्ट किया था। गोयल ने कहा था कि इस समझौते में किसानों और घरेलू उद्योगों के हितों का पूरा ध्यान रखा गया है और सरकार यह सुनिश्चित करेगी कि आयात बढ़ने से देश के बाजार पर नकारात्मक असर न पड़े। उन्होंने यह भी भरोसा दिलाया था कि सुरक्षा उपायों के जरिए घरेलू उत्पादकों को संरक्षण दिया जाएगा। पीयूष गोयल ने अपने बयान में यह तर्क भी दिया था कि भारत के किसान पहले से ही वैश्विक बाजार में मजबूत स्थिति में हैं। उनके अनुसार, भारतीय किसान और मछुआरे मिलकर 50 से 55 अरब डॉलर तक के कृषि और मत्स्य उत्पादों का निर्यात कर रहे हैं, और प्रस्तावित व्यापार समझौता इस निर्यात को और बढ़ावा दे सकता है। मंत्री के इस बयान को सरकार समर्थक वर्ग ने सकारात्मक कदम बताया, लेकिन विपक्ष ने इसे संसद की अनदेखी के रूप में देखा।

यह मामला ऐसे समय सामने आया है, जब संसद में सरकार और विपक्ष के बीच कई मुद्दों पर तीखी बहस चल रही है। विपक्ष लगातार यह आरोप लगाता रहा है कि सरकार संसद को पर्याप्त जानकारी दिए बिना बड़े फैसले कर रही है और बाद में उन्हें औपचारिकता के तौर पर सदन में रखा जाता है। विशेषाधिकार हनन का यह नोटिस इसी राजनीतिक पृष्ठभूमि में और अधिक महत्व रखता है, क्योंकि यह सीधे तौर पर संसदीय परंपराओं और लोकतांत्रिक प्रक्रिया से जुड़ा है।

राजनीतिक जानकारों का मानना है कि यह विवाद केवल एक मंत्री के बयान तक सीमित नहीं रहेगा। अगर सभापति द्वारा जांच में यह पाया जाता है कि वास्तव में संसद के विशेषाधिकारों का उल्लंघन हुआ है, तो इसका असर सरकार की कार्यशैली और संसद में उसकी रणनीति पर पड़ सकता है। वहीं, अगर सरकार यह साबित करने में सफल रहती है कि मंत्री ने पहले सदन में बयान दिया था और उसके बाद मीडिया से बात की, तो विपक्ष के आरोप कमजोर पड़ सकते हैं।

फिलहाल यह मामला जांच के अधीन है और सभी की नजरें सभापति के अगले कदम पर टिकी हैं। एक तरफ सरकार अपने फैसलों को किसानों और उद्योगों के हित में बताकर बचाव की मुद्रा में है, तो दूसरी तरफ विपक्ष संसद की गरिमा और अधिकारों को लेकर आक्रामक रुख अपनाए हुए है। आने वाले दिनों में यह देखना दिलचस्प होगा कि यह विवाद किस दिशा में जाता है और क्या इससे संसद की कार्यवाही और सरकार-विपक्ष संबंधों पर कोई बड़ा असर पड़ता है।

नवसर्जन संस्कृति
हिन्दी

JioTV
CHENNAL NO.
2063

Jio Air Fiber
Jio Tv +
Jio Fiber
Daily Hunt
ebaba Tv
Dish Plus
DTH live OTT
Rock TV
Airtel
Amezone Fire
Rocu Tv-US.UK

देश-दुनिया के नवीनतम समाचार
प्राप्त करने के लिए आज ही
नवसर्जन संस्कृति हिंदी चेनल देखिये

संपादकीय

भारत-अमेरिका व्यापार समझौते के सवाल

बीते शनिवार जारी किए गए भारत–अमेरिका व्यापार समझौते के प्रारूप ने एक बार फिर उस बुनियादी सवाल को केंद्र में ला खड़ा किया है, जो हर मुक्त व्यापार समझौते के साथ उठता रहा है कि इसकी वास्तविक कीमत कौन चुकाएगा और इससे लाभान्वित आखिर कौन होगा। वैश्विक व्यापार के विस्तार और रणनीतिक साझेदारी के तर्क अपनी जगह हैं, लेकिन जब ऐसे समझौते देश की कृषि व्यवस्था और करोड़ों किसानों की आजीविका से टकराते हैं, तो सवाल उठना स्वाभाविक है। यही वजह है कि इस प्रारूप के सामने आते ही देश के अलग-अलग हिस्सों में असंतोष की आवाज़ें तेज़ हो गई हैं और कुछ किसान संगठन आगामी 12 फरवरी को देशव्यापी विरोध प्रदर्शन की तैयारी कर रहे हैं। किसानों की आशंकाएं केवल सोयाबीन तेल, सूखे अनाज और सेब जैसे उत्पादों पर आयात शुल्क में प्रस्तावित छूट तक सीमित नहीं हैं। असल चिंता इससे कहीं गहरी है। यह चिंता भरोसे की है, पारदर्शिता की है और भारतीय कृषि के भविष्य की है। किसानों को डर है कि कहीं मुक्त व्यापार के नाम पर एक बार फिर घरेलू बाजार को ऐसे विदेशी उत्पादों के लिए खोल न दिया जाए, जिनके सामने भारतीय किसान असमान प्रतिस्पर्धा में टिक नहीं पाएंगे। दूसरी ओर सरकार यह दावा कर रही है कि किसान हितों की रक्षा के लिए पर्याप्त सुरक्षा उपाय किए गए हैं और किसी भी स्थिति में कृषि तथा दुग्ध उद्योग को नुकसान नहीं होने दिया जाएगा। कागज़ों पर ये आश्वासन निश्चित रूप से सुकून देने वाले लगते हैं, लेकिन ज़मीनी हकीकत में किसानों की शंकाओं को केवल बयानों से खारिज नहीं किया जा सकता। इस अविश्वास की जड़ें अतीत के अनुभवों में भी छिपी हैं। यूरोपीय संघ और न्यूजीलैंड के साथ हुए पूर्व मुक्त व्यापार समझौतों के बाद सस्ते आयात में तेज़ बढ़ोतरी हुई थी। इसका सीधा असर घरेलू कृषि पर पड़ा और अनेक क्षेत्रों में कमजोर किसानों की हालत और खराब हो गई। आयातित उत्पादों की कम कीमतों के सामने स्थानीय किसान टिक नहीं पाए और उनकी आय पर गहरा दबाव पड़ा। यही अनुभव आज भारत–अमेरिका व्यापार समझौते को लेकर किसानों के मन में आशंका पैदा कर रहा है कि कहीं इतिहास खुद को दोहराने न लगे। विशेष रूप से सेब उत्पादकों की चिंता सबसे अधिक मुखर होकर सामने आ रही है। हिमाचल प्रदेश, जम्मू-कश्मीर और उत्तराखंड में सेब केवल एक फसल नहीं, बल्कि स्थानीय अर्थव्यवस्था की रीढ़ और लाखों परिवारों की आजीविका का आधार है। अमेरिकी सेब को भारी सरकारी सब्सिडी, उन्नत भंडारण व्यवस्था और सशक्त आपूर्ति श्रृंखला का लाभ मिलता है। ऐसे में भारतीय सेब उत्पादकों के लिए उससे प्रतिस्पर्धा करना पहले से ही आसान नहीं है। यदि अमेरिकी सेब पर आयात शुल्क पचास प्रतिशत से घटाकर पच्चीस प्रतिशत कर दिया जाता है और न्यूनतम आयात मूल्य को पचास से बढ़ाकर अस्सी रुपये प्रति किलोग्राम किया जाता है, तो भी यह सेब भारतीय प्रीमियम सेब की कीमत पर ही बाजार में उपलब्ध होगा। सेब उत्पादक संगठनों का कहना है कि ऐसी स्थिति में उपभोक्ता समान मूल्य पर बेहतर पैकेजिंग और एकरूप गुणवत्ता वाले अमेरिकी सेब को तरजीह देगा। इसका सीधा असर घरेलू सेब की बिक्री पर पड़ेगा। इसके साथ ही कोल्ड स्टोरेज की समस्या और गंभीर हो जाएगी। पहले ही महंगे भंडारण और परिवहन की लागत झेल रहे किसानों के लिए सेब को लंबे समय तक संग्रहित करना अलाभकारी हो जाएगा। नतीजतन, उन्हें मजबूरी में कम दाम पर अपनी उपज बेचनी पड़ेगी या उत्पादन से ही पीछे हटना पड़ेगा। केंद्र सरकार यह आश्वासन दे रही है कि कृषि और दुग्ध उद्योग संरक्षित रहेंगे, लेकिन संयुक्त समझौते के प्रारूप में कृषि और खाद्य उत्पादों की एक विस्तृत श्रृंखला पर शुल्क कम करने और गैर-शुल्क बाधाओं को दूर करने की बात भी कही गई है। यही वह बिंदु है, जहां किसानों को सबसे अधिक स्पष्टता की जरूरत है। कम आय, बढ़ती उत्पादन लागत और बढ़ते कर्ज से जूझ रहे किसानों के लिए यह जानना बेहद जरूरी है कि किन उत्पादों पर, किस सीमा तक और किस समयावधि में बाजार खोला जाएगा। अस्पष्ट शर्तें और अधूरी जानकारी केवल अविश्वास को और गहरा करती हैं। इसी वजह से कई किसान संगठनों, विपक्षी दलों और कुछ राज्य सरकारों ने मांग की है कि इस व्यापार समझौते का पूरा विवरण संसद के समक्ष रखा जाए। यह मांग पूरी तरह तार्किक है, क्योंकि व्यापार समझौते भी घरेलू कानूनों की तरह ही देश की अर्थव्यवस्था और लोगों की आजीविका को गहराई से प्रभावित करते हैं। जब किसी कानून पर संसद में चर्चा और बहस आवश्यक मानी जाती है, तो ऐसे अंतरराष्ट्रीय समझौतों पर भी लोकतांत्रिक निगरानी और पारदर्शिता उतनी ही जरूरी है।

सहनशक्ति बढ़ाकर करें जोखिम का मुकाबला

> कुछ विरले ऐसे होते हैं जो गहन अवसाद और पीड़ा का सामना भी धैर्य और हिम्मत से करते हैं। ऐसे ही व्यक्ति आगे चलकर इतिहास रचते हैं। जापानी लोग बहुत ही सरलता से मुश्किल का सामना करते हैं।

कहते हैं कि मनुष्य और कॉकरोच दो ऐसे जीव हैं जो हर परिस्थिति में जीवित रहना जानते हैं। कई बार मनुष्य को चारों ओर अंधकार ही अंधकार नज़र आता है। पीड़ा इतनी गहन हो जाती है कि सब्र नहीं होता। ऐसे में कई लोग हार मान जाते हैं तो कुछ विरले ऐसे होते हैं जो गहन अवसाद और पीड़ा का सामना भी धैर्य और हिम्मत से करते हैं। ऐसे ही व्यक्ति आगे चलकर इतिहास रचते हैं। जापानी लोग बहुत ही सरलता से मुश्किल का सामना करते हैं। वे 'निनताई' शब्द में बहुत अधिक विश्वास करते हैं। इस जापानी शब्द का अर्थ बहुत गहरा और प्रेरणा देने वाला है। 'निनताई' दो शब्दों के मेल से बना है- निन और ताई। 'निन' का अर्थ है 'सहन करना' या 'छिपाना' और 'ताई' का अर्थ है 'प्रतिरोध' या 'झेलने की शक्ति'। निनताई ऐसी मानसिक शक्ति है जो हमें तब भी मैदान में टिकाए रखती है, जब बाकी सब हार मानकर जा चुके होते हैं। यह बिना शिकायत किए और बिना रुके चलने की कला है। इस कला को सीखने से हर मुश्किल काम व्यक्ति के लिए सहज हो जाता है। हमारे देश के क्रांतिकारियों ने भी 'निनताई' शब्द को अपने जीवन में उतार लिया था। उनकी सहनशीलता इस कदर बढ़ गई थी कि अंग्रेजों का बर्बर व्यवहार अंग्रेजों को ही चौंकाने पर मजबूर कर देता था। भारतीय क्रांतिकारी देश की खातिर अंग्रेजों के हर अत्याचार को बर्दाश्त करता था, मगर उन्हें अपने देश की महत्वपूर्ण बातों की भनक तक लगने नहीं देता था। अविभाजित बंगाल के चटगांव जो कि अब बांग्लादेश में है, के स्वाधीनता आंदोलन के नायक सूर्यसेन उर्फ सुरज्या सेन भी ऐसे ही वीर क्रांतिकारियों में से एक हैं। होश संभालते ही इन्होंने अंग्रेजों के छक्के

छुड़ाने आरंभ कर दिए थे। इन्होंने अपने साथियों को गुरिल्ला युद्ध के लिए प्रेरित किया। 23 दिसम्बर, 1923 को इन्होंने चटगांव में असम-बंगाल रेलवे के ट्रेजरी ऑफिस को लूटा। इन्हें सबसे बड़ी सफलता चटगांव आर्मरी रेड के रूप में मिली, इससे अंग्रेज सरकार बुरी तरह छटपटा उठी। सूर्यसेन ने युवाओं को संगठित कर भारतीय प्रजातांत्रिक सेना नामक संगठन खड़ा किया। 18 अप्रैल, 1930 को सैनिक वस्त्रों में इन युवाओं ने चटगांव के सहायक सैनिक शस्त्रागार पर कब्जा कर लिया। सूर्यसेन मास्टर दा के रूप में अपने इलाके में प्रसिद्ध हो गए थे।

मास्टर सूर्यसेन ने इन गतिविधियों द्वारा अंग्रेजों को सीधे चुनौती दी थी। उन्होंने अपने साथियों के साथ मिलकर चटगांव को अंग्रेजी हुकूमत के शासन के दायरे से बाहर कर लिया था और भारतीय ध्वज को फहराया था। क्रांतिकारियों ने टेलीफोन और टेलीग्राफ के तार काट दिए और रेलमार्गों को अवरुद्ध कर दिया। इन सभी सूचना माध्यमों को ध्वस्त करने के कारण चटगांव से अंग्रेज सरकार का संपर्क तंत्र टूट गया था। इस कारण अंग्रेजों को लोहे के चने चबाने पड़े।

अंग्रेज सूर्यसेन के पीछे हाथ धोकर पड़ गए। आखिर 16 फरवरी, 1933 को उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया। उन्हें गिरफ्तार करने के बाद अंग्रेजों ने उन पर अमानवीय और बर्बर अत्याचार किए। उन्हें फांसी की सजा सुनाई गई। लेकिन फांसी देने से पहले उन्हें बहुत अधिक यातनाएं दी गईं। फांसी पर लटकाने से पहले उनके हाथों के नाखून उखाड़ लिए गए। उनके दांतों को हथौड़ों से तोड़ दिया गया। उनके शरीर के सभी अंगों और जोड़ों को बुरी तरह तोड़ दिया गया। मरते-मरते भी सूर्यसेन ने अपने अंतिम पत्र में लिखा, 'प्रिय मित्रों, आगे बढ़ो और कभी अपने कदम पीछे मत खींचना। उठो और कभी निराश मत होना। सफलता अवश्य मिलेगी।'

वर्तमान समय में तो 'निनताई' शब्द का महत्व और भी अधिक बढ़ गया है। आज युवाओं में असहनशीलता की प्रवृत्ति देखने को मिल रही है। युवा 'निनताई' के माध्यम से अपनी असहनशीलता को 'सहनशीलता' में प्रवृत्त कर सकते हैं। इसके लिए उन्हें कोशिश करनी होगी कि जब भी कोई प्रोजेक्ट या काम बहुत अधिक थका दे, तो कुछ देर रुककर अध्यात्म की ओर मुड़ना। अपने अंतर्मन से ये संवाद करना कि श्रम और हिम्मत ही कार्य को पूर्ण कराते हैं। दर्द सहन करने की क्षमता को बढ़ाने के लिए नियमित व्यायाम करना और पौष्टिक भोजन का सेवन करना। सुबह-सवेरे उठकर प्रकृति के सान्निध्य में पक्षियों और पेड़ों को करीब से देखना। आंखें बंद कर अपनी आंतरिक क्षमता को मजबूत बनाना। सत्य के साथ आगे बढ़ना और निरंतर सीखने की इच्छा को जाग्रत रखना। सदैव दूसरों की मदद के लिए तैयार रहना। उपरोक्त बातें प्रत्येक व्यक्ति की 'निनताई' यानी कि सहनशक्ति को बढ़ा देती हैं और उन्हें जोखिमों से लड़ने के लिए प्रेरित करती हैं। वही जीतता है जो जोखिम उठाने के लिए तैयार रहता है। जो जोखिमों से डरता है, वह कहीं नहीं पहुंचता, उसे केवल उन साधनों से संतोष करना पड़ता है जो जोखिम उठाने वाले लोग छोड़ देते हैं।

प्रेरणा

ईमानदारी की लौ जो जीवन भर जलती रही

1939 का वह छोटा-सा प्रसंग देखने में जितना साधारण लगता है, उतना ही गहरा और दूरगामी अर्थ अपने भीतर समेटे हुए है। यह वह समय था जब देश गुलामी की जंजीरों में जकड़ा हुआ था, युवाओं के सामने करियर, संघर्ष और आत्मनिर्भरता की कठिन राह थी। ऐसे समय में आगरा के सेंट जॉन कॉलेज में अंग्रेज़ी साहित्य में एम.ए. कर रहे पंडित दीनदयाल उपाध्याय अपने एक मित्र के साथ किराए के कमरे में रहते थे। सीमित साधन, सादा जीवन और ऊँचे आदर्श—यही उनके व्यक्तित्व की पहचान थी। उसी दौर की एक छोटी-सी घटना उनके चरित्र की महानता को उजागर करती है और यह बताती है कि नैतिकता कोई उपदेश नहीं, बल्कि रोज़मर्रा के जीवन में निभाया जाने वाला आचरण है।

एक दिन दीनदयाल जी और उनके मित्र बाज़ार से सब्ज़ी खरीदकर अपने कमरे की ओर लौट रहे थे। रास्ते में अचानक दीनदयाल जी का मन विचलित हो उठा। उन्होंने मित्र को बताया कि उनकी जेब में एक-एक पैसे के तीन सिक्के थे, जिनमें से एक सिक्का घिसा हुआ और खोटा था। सब्ज़ी खरीदते समय अनजाने में वही खोटा सिक्का सब्ज़ी बेचने वाली अम्मा को दे दिया गया था। यह बात किसी और के लिए मामूली हो सकती थी—आख़िर एक पैसे का ही तो सिक्का था, और वह भी अनजाने में। लेकिन दीनदयाल जी के लिए यह प्रश्न पैसे का नहीं, बल्कि आत्मा की शुद्धता का था। उनका मन लगातार उन्हें कचोट रहा था, मानो अंतरात्मा ने चैन छीन लिया हो। उनकी बेचैनी बढ़ती गई और अंततः वे मित्र के साथ वापस बाज़ार की ओर लौट पड़े। उस समय न तो कोई उन्हें देख रहा था, न ही किसी ने उनसे शिकायत की थी। चाहें तो वे चुपचाप उस घटना को भूल सकते थे। लेकिन दीनदयाल जी के लिए नैतिकता परिस्थिति-आधारित नहीं थी, वह उनके जीवन का मूल स्वभाव थी। उन्होंने सब्ज़ी बेचने वाली मां से मिलकर पूरी बात साफ़-साफ़ बता दी—कि उनसे भूल हो गई है और वे खोटा सिक्का दे आए हैं। यह सुनकर उस मां ने बड़े स्नेह से कहा कि बेटा, इसमें चिंता की कोई बात नहीं, जैसा भाग्य में लिखा होता है, वैसा ही होता है। उसने उन्हें माफ़ करते हुए आशीर्वाद भी दिया कि उनकी शुद्ध भावना उन्हें आगे बहुत ऊँचाई तक ले जाएगी।

लेकिन दीनदयाल जी यहीं नहीं रुके। उन्होंने तीसरा खरा सिक्का निकालकर मां को दिया और बदले में अपना खोटा सिक्का वापस लिया। जब यह लेन-देन पूरा हुआ, तब जाकर उनके चेहरे पर संतोष की चमक उभरी। यह संतोष किसी आर्थिक लेन-देन का नहीं था, बल्कि आत्मिक शांति का था। वह शांति, जो तभी मिलती है जब मनुष्य अपने अंतरात्मा के प्रति ईमानदार होता है। उस क्षण शायद किसी ने कल्पना भी नहीं की होगी कि यही युवक आगे चलकर भारतीय राजनीति और चिंतन को नई दिशा देने वाला है।

यह प्रसंग हमें सिखाता है कि महानता का निर्माण बड़े-बड़े मंचों पर नहीं, बल्कि छोटे-छोटे निर्णयों में होता है। एक खोटा सिक्का लौटाने का साहस, जब कोई देखने वाला न हो, वही साहस आगे चलकर बड़े सिद्धांतों और नीतियों की नींव बनता है। दीनदयाल जी का जीवन इसी तरह के असंख्य छोटे, लेकिन नैतिक निर्णयों से गढ़ा गया था। उन्होंने कभी साधनों की कमी को अपने मूल्यों की कमी नहीं बनने दिया। सादगी, सत्यनिष्ठा और समाज के प्रति दायित्व—ये सब उनके व्यक्तित्व में स्वाभाविक रूप से समाए हुए थे।

आगे चलकर वही दीनदयाल उपाध्याय एक प्रतिष्ठित दार्शनिक, लेखक और समाजचिंतक के रूप में उभरे। उन्होंने राजनीति को सत्ता प्राप्ति का साधन नहीं, बल्कि समाज के उत्थान का माध्यम माना। उनका चिंतन 'एकात्म मानववाद' के रूप में सामने आया, जिसमें व्यक्ति, समाज और राष्ट्र को एक-दूसरे से जुड़ी हुई इकाइयों के रूप में देखा गया। उनके लिए नैतिकता केवल व्यक्तिगत जीवन तक सीमित नहीं थी, बल्कि सार्वजनिक जीवन की आत्मा थी। शायद यही कारण था कि उनके विचार आज भी प्रासंगिक लगते हैं, क्योंकि वे किसी तात्कालिक लाभ पर नहीं, स्थायी मूल्यों पर आधारित थे।

सन 1967 में उन्हें भारतीय जनसंघ का अखिल भारतीय अध्यक्ष बनाया गया। यह पद उनके लिए सम्मान से अधिक एक दायित्व था। उन्होंने संगठन और कार्यकर्ताओं को यह संदेश दिया कि राजनीति में सफलता का माप सत्ता नहीं, बल्कि चरित्र होना चाहिए। उनके जीवन की सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि उन्होंने जो कहा, वही जिया। शब्द और कर्म के बीच की दूरी उनके जीवन में लगभग शून्य थी। 1939 में एक खोटे सिक्के को लेकर जो बेचैनी उन्होंने महसूस की थी, वही बेचैनी आगे चलकर सामाजिक अन्याय, शोषण और अनैतिकता को देखकर भी उन्हें होती थी।

आज के समय में, जब नैतिकता को अक्सर व्यावहारिकता के नाम पर पीछे छोड़ दिया जाता है, दीनदयाल जी का यह छोटा-सा प्रसंग एक प्रकाश स्तंभ की तरह सामने आता है। यह याद दिलाता है कि ईमानदारी कोई पुरानी या अप्रासंगिक चीज़ नहीं, बल्कि हर युग की सबसे बड़ी आवश्यकता है। अगर एक छात्र अपने सीमित साधनों में भी अपने मूल्य नहीं छोड़ता, तो वही छात्र आगे चलकर समाज को दिशा देने की क्षमता रखता है। दीनदयाल जी का जीवन इस बात का प्रमाण है कि चरित्र ही सबसे बड़ी पूंजी है।

अंततः यह कथा हमें यही सिखाती है कि नैतिकता का आदर्श किसी किताब में लिखा हुआ नियम नहीं, बल्कि रोज़मर्रा के जीवन में निभाया गया संकल्प है। खोटा सिक्का लौटाने का वह निर्णय भले ही छोटा था, लेकिन उसी में एक महान जीवन की झलक छिपी हुई थी। जब व्यक्ति अपने भीतर की आवाज़ को सुनना सीख लेता है, तो वही आवाज़ उसे सही मार्ग पर ले जाती है—चाहे वह मार्ग कितना ही कठिन क्यों न हो। पंडित दीनदयाल उपाध्याय का जीवन इसी सत्य का जीवंत उदाहरण है।

जापान में सना ए. ताका इची को प्रचंड जनादेश और विपक्ष का सूपड़ा साफ कर जनता ने क्या संदेश दिया?

जापान में निचले सदन के चुनाव परिणाम ने देश की राजनीति में एक नया अध्याय शुरू कर दिया है। इस चुनाव में प्रधानमंत्री सना ए. ताका इची के नेतृत्व वाली लिबरल डेमोक्रेटिक पार्टी ने अभूतपूर्व जीत हासिल की है। पहले चरण के मतगणना के परिणामों के अनुसार ताका इची की पार्टी अकेले ही निचले सदन में 316 सीटें जीतने में सफल रही तथा उसने गठबंधन सहयोगी के साथ मिलकर कुल 352 से अधिक सीटों का दो-तिहाई बहुमत हासिल कर लिया। इस प्रकार वह अकेले ही अपनी पार्टी के बहुमत से कहीं आगे निकल गईं और विपक्ष को भारी पराजय का सामना करना पड़ा इस चुनाव को राजनीतिक पर्यवेक्षकों ने इसलिए भी महत्वपूर्ण बताया क्योंकि प्रधानमंत्री ताका इची ने महज कुछ ही महीनों पहले सत्ता संभाली थी और यह उनका पहला आम चुनाव था। उन्होंने तीन महीने पहले ही निचले सदन को भंग कर दिया था ताकि जनता से स्पष्ट जनादेश लिया जा सके। चुनाव के दिन भी देश के कई हिस्सों में जोरदार बर्फबारी और ठंडे मौसम के कारण मतदान केन्द्रों पर कठिन परिस्थितियाँ पैदा हुईं, लेकिन इसके बावजूद मतदाताओं की भागीदारी अपेक्षाकृत मजबूत रही। यह दर्शाता है कि जापानी जनता ने ठंडे मौसम और मुश्किल हालात के बावजूद महत्वपूर्ण राजनीतिक फैसले में भाग लेने की प्रतिबद्धता दिखाई।

इस चुनाव में विपक्षी दलों को जिस प्रकार की पराजय मिली, वह जापानी राजनीति के इतिहास में अब तक का सबसे बड़ा घटनाक्रम था। मुख्य विपक्षी गठबंधन और छोटे दलों ने जिस तरह अपनी सीटें गंवाईं, उससे स्पष्ट होता है कि इस समय जनता ने ताका इची के नेतृत्व को अधिक भरोसेमंद और स्थिर विकल्प के रूप में चुना। अधिकांश विश्लेषकों का मानना है कि मतदान के पीछे मुख्य कारण आर्थिक और सामाजिक मुद्दों के साथ सुरक्षा नीतियों पर मतदाताओं की चिंताएँ थीं, जिनके प्रति उन्होंने ताका इची की स्पष्ट सोच को प्राथमिकता दी। ताका इची की जीत का विश्लेषण करते हुए कहा जा सकता है कि यह सिर्फ संख्या की जीत नहीं है, बल्कि यह एक राजनैतिक विश्वास का जनादेश भी है। जापान पिछले कुछ वर्षों से बढ़ते आर्थिक दबाव, बुजुर्ग आबादी से जुड़ी सामाजिक चुनौतियों और बढ़ते क्षेत्रीय तनावों के बीच अपना रास्ता ढूंढ़ रहा है। चीन के साथ संबंधों में तनाव, ताइवान को लेकर बदलती भू-राजनीति तथा अमेरिका के साथ सुरक्षा साझेदारी जैसी विषयों को लेकर जनता के भीतर मजबूत भावनाएँ हैं। ताका इची ने चुनाव के दौरान स्पष्ट रूप से यह संदेश दिया था कि जापान को न केवल आर्थिक सुधारों की आवश्यकता है बल्कि उसे अपनी रक्षा और वैश्विक भूमिका को भी मजबूती से परिभाषित करना होगा। हम आपको बता दें कि सना ताका इची स्वयं एक लंबा राजनीतिक अनुभव लिये हुए हैं। उन्होंने अपनी राजनीतिक यात्रा 1990 के दशक में संसद सदस्य के रूप में शुरू की थी और समय-समय पर कई महत्वपूर्ण विभागों तथा मंत्रालयों में काम किया। अपने अनुभव, दृढ़ नीतियों और स्पष्ट विचारधारा के कारण उन्हें पार्टी में एक मजबूत छवि मिली। वह इस चुनाव से पहले जापान की पहली महिला प्रधानमंत्री बनीं और इस जीत ने उन्हें अपनी पार्टी तथा जनता दोनों से मजबूत समर्थन दिलाया है। ताका इची ने अपने राजनीतिक कॅरियर में व्यापक विषयों पर सार्वजनिक रूप से अपने दृष्टिकोण को प्रस्तुत किया है, जिनमें आर्थिक नीतियाँ, सामाजिक सुधार, राष्ट्रीय सुरक्षा तथा जापान की अंतरराष्ट्रीय भूमिका शामिल हैं।

उनके नेतृत्व में पार्टी की जीत का एक प्रमुख कारण यह भी बताया जा रहा है कि उन्होंने आर्थिक स्थिरता, रोजगार सृजन और सामाजिक कल्याण कार्यक्रमों को चुनाव में प्रमुख मुद्दों के रूप में उठाया। जापान की अर्थव्यवस्था बड़े कर्ज़, कम उत्पादन वृद्धि और बढ़ते जीवनयापन लागत जैसी समस्याओं का सामना कर रही थी, जिनके समाधान के लिये जनता अधिक ठोस नीतियों की उम्मीद कर रही थी। ताका इची ने यह विश्वास दिलाया कि उनकी सरकार इन समस्याओं के समाधान के लिये गंभीर प्रयास करेगी और एक दीर्घकालिक आर्थिक सुधार योजना लागू करेगी।

सुरक्षा मामलों में उनकी विचारधारा और भी अधिक स्पष्ट रही है। उन्होंने बार-बार यह कहा कि जापान को अपनी रक्षा नीतियों को अधिक आत्मविश्वास तथा स्वतंत्रता के साथ परिभाषित करना चाहिए। अमेरिका के साथ रक्षा साझेदारियों को और मजबूती प्रदान करना, क्षेत्रीय सुरक्षा सहयोग को बढ़ाना तथा चीन और उत्तर कोरिया जैसे पड़ोसी देशों से उत्पन्न चुनौतियों का सामना करना उनकी प्राथमिकता रही है। इस दृष्टिकोण ने उन मतदाताओं को प्रभावित किया जो जापान की क्षेत्रीय स्थिति को एक जटिल तथा बढ़ती चुनौतियों वाला क्षेत्र मानते हैं।

वैश्विक स्तर पर भी इस चुनाव के परिणाम का प्रभाव देखा जा रहा है। इंडो-पैसेफिक क्षेत्र में जापान की भूमिका महत्वपूर्ण है और ताका इची की जीत ने यह संकेत दिया है कि जापान वैश्विक सुरक्षा व्यवस्था तथा आर्थिक साझेदारियों में और अधिक सक्रिय भूमिका निभाने के लिये तैयार है। यह क्षेत्रीय स्थिरता, मुक्त व्यापार और सहयोग के लिये एक सकारात्मक संकेत है। जापान की बढ़ती भूमिका ने अमेरिका तथा अन्य मित्र देशों के साथ मिलकर कई साझेदारी योजनाओं को गति दी है और यह उम्मीद जताई जा रही है कि ताका इची सरकार इस दिशा को और मजबूती से आगे बढ़ाएगी।

अभियान

बाबा विश्वनाथ की शरण में जीवन की पूर्णता: काशी की वह यात्रा जो आत्मा को जागृत कर देती है

काशी एक नगर नहीं, एक अनुभूति है। यह अनुभूति तब जन्म लेती है जब मनुष्य के भीतर कहीं गहराई में छिपी हुई शिव की पुकार अचानक सुनाई देने लगती है। कहते हैं कि काशी बुलाती है, कोई यूँ ही यहाँ नहीं आता। जब बाबा विश्वनाथ का बुलावा आता है, तब रास्ते अपने आप बनते चले जाते हैं, योजनाएँ अपने आप साकार होने लगती हैं और मनुष्य अनजाने ही उस पथ पर चल पड़ता है, जो उसे स्वयं से मिलाने वाला होता है। वाराणसी की यात्रा दरअसल बाहर की नहीं, भीतर की यात्रा है, जहाँ हर कदम पर अहंकार छूटता है और हर श्वास में शिव का स्मरण बसता चला जाता है।

जैसे ही काशी की धरती पर पैर पड़ते हैं, एक अलग ही स्पंदन महसूस होता है। हवा में भक्ति घुली होती है, गंगा की लहरों में वैराग्य का संगीत बहता है और गलियों में चलते साधु-संतों की आँखों में कोई अनकहा सत्य झलकता है। यहाँ जीवन अपनी सारी जटिलताओं के बावजूद सहज लगता है, क्योंकि मृत्यु भी यहाँ उत्सव का ही एक रूप है। यही वह भूमि है जहाँ महादेव स्वयं विराजते हैं, जहाँ हर पत्थर शिवकथा कहता है और हर क्षण मोक्ष की ओर इशारा करता है।

बाबा विश्वनाथ का मंदिर इस नगरी का प्राण है। तंग गलियों से होकर जब भक्त मंदिर की ओर बढ़ता है, तो वह केवल भीड़ से नहीं, अपने भीतर की अशांति से भी गुजर रहा होता है। हर मोड़ पर "हर हर महादेव" का उद्घोष कानों में पड़ते ही मन थोड़ा और हल्का हो जाता है। दुकानों पर सजे फूल, बेलपत्र और धूप अगरबत्ती केवल सामग्री नहीं होते, वे भक्त की भावना का विस्तार होते हैं। मंदिर के शिखर का पहला दर्शन होते ही हृदय स्वतः नतमस्तक हो जाता है, आँखें अनायास ही भर आती हैं और भीतर कहीं कुछ पिघलने लगता है।

मंदिर में प्रवेश से पहले कतारें, सुरक्षा जांच और प्रतीक्षा आधुनिक समय की आवश्यकता हो सकती हैं, लेकिन एक सच्चे भक्त के लिए यह सब भी तपस्या ही है। धैर्य के साथ खड़े रहना, मन को एकाग्र रखना और किसी भी प्रकार की अधीरता को त्याग देना, यह सब भक्ति की पहली सीढ़ी है। यहाँ कोई जल्दी नहीं करता, क्योंकि शिव के दर्शन में जल्दबाजी नहीं होती। शिव तो ठहराव हैं, शिव तो शांति हैं, शिव तो स्वयं समय से परे हैं।

जब गर्भगृह के भीतर प्रवेश होता है और बाबा विश्वनाथ के ज्योतिर्लिंग पर दृष्टि पड़ती है, तो वह क्षण शब्दों से परे चला जाता है। वहाँ न कोई बड़ा होता है, न छोटा;

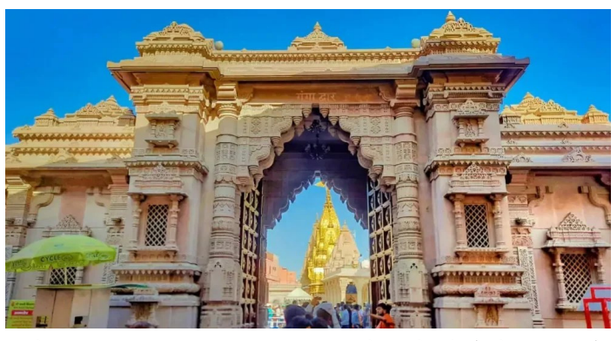

न कोई ज्ञानी, न अज्ञानी। सब एक समान होते हैं—एक छोटे से भक्त की तरह, जो अपने आराध्य के सामने खड़ा है। उस क्षण मनुष्य अपने सारे दुख, सारी इच्छाएँ, सारी थकान बिना कुछ कहे ही बाबा के चरणों में रख देता है। लगता है जैसे शिव सब समझ रहे हों, बिना बोले ही सब स्वीकार कर रहे हों। काशी में दर्शन का समय केवल घड़ी से नहीं, भाव से तय होता है। भोर की बेला में जब मंदिर के कपाट खुलते हैं, तब वातावरण में एक अलौकिक पवित्रता छा जाती है। दीपों की लौ, मंत्रों की गूंज और घंटियों की ध्वनि मिलकर ऐसा अनुभव कराती है मानो स्वयं कैलाश की सुबह हो रही हो। यह वह समय होता है जब संसार अभी सो रहा होता है और केवल भक्त और भगवान के बीच मौन संवाद चल रहा होता है। वहीं संध्या के समय, जब दिन भर की थकान लिए हुए मनुष्य गंगा की ओर बढ़ता है, तो वहाँ होने वाली आरती उसे फिर से जीवन से जोड़ देती है।

गंगा काशी की आत्मा हैं। कहा जाता है कि गंगा केवल जल नहीं, चेतना हैं। गंगा में स्नान करते समय जैसे शरीर ही नहीं, मन भी शुद्ध होता है। जल की हर लहर मानो कहती है कि जो था, उसे छोड़ दो और जो है, उसे स्वीकार करो। गंगा स्नान के बाद बाबा के दर्शन का महत्व इसलिए भी बढ़ जाता है, क्योंकि तब भक्त बाहरी और भीतरी दोनों रूप से शुद्ध होने का प्रयास करता है। यह प्रयास ही भक्ति है, पूर्णता नहीं।

काशी के घाट इस यात्रा को और गहरा बना देते हैं। दशाश्वमेध घाट की गंगा आरती में जब सैकड़ों दीप एक साथ प्रज्वलित होते हैं, तो ऐसा लगता है मानो पूरा ब्रह्मांड एक लय में धड़क रहा हो। मंत्र, शंख और घंटियों की ध्वनि मन को किसी और ही लोक में ले जाती है। अस्सी घाट की सुबह, जहाँ उगते सूर्य के साथ भजन और योग होता है, जीवन में नई ऊर्जा भर देती है। वहीं मणिकर्णिका और हरिश्चंद्र घाट जीवन के उस सत्य से परिचय कराते हैं, जिसे हम अक्सर अनदेखा कर देते हैं। यहाँ जलती चिताएँ सिखाती हैं कि अंत में सब यहीं रह जाता है, केवल कर्म और नाम स्मरण ही साथ जाता है।

काल भैरव के दर्शन के बिना काशी की यात्रा अधूरी मानी जाती है। कहा जाता है कि वे काशी के रक्षक हैं, कोतवाल हैं। उनके सामने खड़े होकर भक्त अपने भीतर के भय को पहचानता है और उसे छोड़ने का साहस करता है। संकट मोचन हनुमान जी का मंदिर भक्त को यह विश्वास देता है कि चाहे जीवन में कितने ही संकट क्यों न हों, यदि भक्ति सच्ची हो तो मार्ग अवश्य निकलता है।

काशी विश्वनाथ धाम की यात्रा नियमों, समय और स्थलों से कहीं अधिक है। यह एक आंतरिक अनुशासन सिखाती है—संयम, शुद्धता और समर्पण का। यहाँ आकर मनुष्य समझ पाता है कि भक्ति दिखावे की नहीं, बल्कि भीतर की अग्नि है, जो धीरे-धीरे अज्ञान को जलाकर ज्ञान का प्रकाश फैलाती है। शिव यहाँ केवल पूज्य नहीं, मार्गदर्शक हैं, जो मौन रहकर भी बहुत कुछ सिखा देते हैं।

जब भक्त काशी से लौटता है, तो वह वही नहीं रहता जो यहाँ आया था। उसके भीतर कहीं न कहीं शिव बस चुके होते हैं। जीवन की आपाधापी में भी उसे एक ठहराव मिल जाता है, दुख में भी एक स्वीकार भाव आ जाता है और सुख में भी कृतज्ञता बनी रहती है। काशी सिखाती है कि जीवन और मृत्यु विरोधी नहीं, बल्कि एक ही यात्रा के दो पड़ाव हैं।

अंततः, बाबा विश्वनाथ की शरण में आकर यही अनुभूति होती है कि सब कुछ होते हुए भी कुछ नहीं है और कुछ न होते हुए भी सब कुछ है। यही शिव तत्व है, यही काशी की महिमा है। जो एक बार इस महिमा को छू लेता है, उसके लिए "हर हर महादेव" केवल एक उद्घोष नहीं, बल्कि जीवन की धड़कन बन जाता है।

RNI No. GJHIN/25/A2786 Printed, Published & Owned by RAGINI JIGNESHKUMAR VAGHELA and Printed By (1) JIGNESH RASHIKBHAI GAJJAR at Vansh Corporation, A/8, Shayona Golden Estate, Shahibag, Ahmedabad - 380 004
(2) DESAI RAHUL MAHESHBHAI at Bhavani Offset, "Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002. (3) HADIK MAHESHBHAI DESAI at Bhoomi Offset, "Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002
and Published from B/13, Sneh Plaza Shopping Center, I.O.C. Road, Chandkheda, Ahmedabad - 382 424. Editor : JIGNESHKUMAR PATHABHAI VAGHELA
Regd.Office : B/13, Sneh Plaza Shopping Center, I.O.C. Road, Chandkheda, Ahmedabad - 382 424 Gujarat,India. Phone : (o) 7698333307 (M) 8485951747,7096333307
Email:navsarjansanskruti2016@gmail.com*navsarjansanskruti2016@yahoo.com*Website : www.navsarjansanskruti.com

श्रीलंका के जनता विमुक्ति पेरामुना के महासचिव श्री टिल्विन सिल्वा एवं प्रतिनिधिमंडल ने मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल से शिष्टाचार भेंट की

- प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में सुदृढ़ हुए भारत-श्रीलंका संबंधों को आगे बढ़ाने में फलदायी बैठक
- श्रीलंका पॉलिसी ड्रिवन स्टेट के रूप में गुजरात की विभिन्न नीतियों का लाभ लेकर रुचि वाले सहयोग क्षेत्रों में गुजरात के साथ सहभागीता कर सकता है : मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल
- भगवान बुद्ध के पवित्र अवशेष श्रीलंका में आयोजित प्रदर्शनी के लिए देने पर महासचिव ने आभार व्यक्त किया
- गुजरात की एक्सपर्टीज – नॉलेज शेयरिंग और नॉ-हाउ का लाभ लेने की तत्परता व्यक्त की वाइब्रेंट समिट 2027 में शामिल होने के लिए मुख्यमंत्री का आमंत्रण

जीएनएस)। गांधीनगर : मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल से श्रीलंका के शासक दल जनता विमुक्ति पेरामुना के महासचिव श्री टिल्विन सिल्वा और प्रतिनिधिमंडल ने सोमवार को शिष्टाचार भेंट की।

मुख्यमंत्री ने इस डेलिगेशन का गुजरात आगमन पर स्वागत करते हुए कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में भारत और श्रीलंका के संबंध अधिक सुदृढ़ हुए हैं तथा दोनों देशों के बीच लंबे समय से चले आ रहे ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक संबंधों को और गति मिली है। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि यह बैठक इन संबंधों को और आगे बढ़ाने में फलदायी सिद्ध होगी।

उन्होंने कहा कि गुजरात एक पॉलिसी ड्रिवन स्टेट है, इसलिए विभिन्न क्षेत्रों की नीतियों का लाभ श्रीलंका अपने रुचि वाले क्षेत्रों के लिए ले सकता है इसके लिए राज्य सरकार और श्रीलंका के बीच पारस्परिक समन्वय बढ़ाने की उन्होंने वकालत की।

इतना ही नहीं, इस बैठक में अधिक से अधिक गुजरातियों के श्रीलंका भ्रमण को बढ़ावा देने के लिए भी चर्चा-विमर्श किया गया।

जेवीपी के महासचिव ने भावना व्यक्त की कि महात्मा गांधी और प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की भूमि गुजरात और भारत की उनकी यह पहली यात्रा है और इससे वे भावुक हुए हैं तथा गुजरात की प्रगति से प्रभावित हैं।

उन्होंने भगवान बुद्ध के पवित्र अवशेष (रेलिक्स) श्रीलंका के कोलंबो में आयोजित प्रदर्शनी के लिए गुजरात द्वारा उपलब्ध कराने पर केंद्र और राज्य सरकार का आभार व्यक्त किया। श्री टिल्विन सिल्वा ने कृतज्ञता व्यक्त करते हुए कहा कि आवश्यकता के समय भारत ने हमेशा श्रीलंका को इन्फ्रास्ट्रक्चर डेवलपमेंट सहित विभिन्न क्षेत्रों में सहयोग दिया है और उसके साथ खड़ा रहा है।

उन्होंने गुजरात-श्रीलंका के औद्योगिक क्षेत्र में भागीदारी के प्रति भी उत्कृष्टता दर्शाई तथा अमूल की अपनी यात्रा का उल्लेख करते हुए सहकारिता क्षेत्र सहित विभिन्न क्षेत्रों में गुजरात से एक्सपर्टीज, नॉलेज शेयरिंग और नॉ-हाउ प्राप्त करने में गहरी रुचि दिखाई।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने आगामी वाइब्रेंट समिट 2027 में श्रीलंका को पार्टनर कंट्री के रूप में शामिल होने का आमंत्रण दिया तथा प्रधानमंत्री के मार्गदर्शन में राज्य की क्षेत्रीय औद्योगिक क्षमताओं को विश्व के समक्ष प्रस्तुत करने के लिए वीजीआरसी के सफल आयोजन की विस्तृत जानकारी भी दी।

मुख्यमंत्री के साथ हुई इस सौजन्य भेंट बैठक में मुख्य सचिव श्री एम. के. दास, उद्योग विभाग की अपर मुख्य सचिव सुश्री ममता वर्मा, मुख्यमंत्री के प्रधान सचिव श्री संजीव कुमार, उद्योग आयुक्त श्री पी. स्वरूप, मुख्यमंत्री के अपर प्रधान सचिव डॉ. विक्रांत पांडे, सचिव डॉ. अजय कुमार तथा अन्य वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित रहे।

गांधीधाम–आदीपुर रेलखंड पर चौहरीकरण कार्य के कारण कुछ ट्रेनें प्रभावित रहेंगी

जीएनएस)। पश्चिम रेलवे के अहमदाबाद मंडल के गांधीधाम–भुज सेक्शन में गांधीधाम–आदीपुर चौहरीकरण (Quadrupling) परियोजना के अंतर्गत गांधीधाम केबिन–आदीपुर स्टेशनों के बीच कमीशनिंग से संबंधित प्रस्तावित (TWO) कार्य के कारण 13 फरवरी 2026 तक कुछ ट्रेनें प्रभावित रहेंगी।

अहमदाबाद मंडल के गांधीधाम–भुज सेक्शन में गांधीधाम केबिन और आदीपुर स्टेशनों के बीच चौहरीकरण (Quadrupling) कमीशनिंग का कार्य प्रगति पर है। यह परियोजना क्षेत्र में रेल अवसंरचना को सुदृढ़ करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। चौहरीकरण से इस खंड की लाइन क्षमता में वृद्धि होगी, जिससे ट्रेनों का परिचालन अधिक सुचारु, समयनिष्ठ और सुरक्षित बनेगा। साथ ही माल एवं यात्री यातायात का बेहतर प्रबंधन संभव होगा, जिससे क्षेत्रीय व्यापार, उद्योग और यात्रियों को लाभ पहुँचेगा।

अहमदाबाद मंडल द्वारा परियोजना को निर्धारित समय-सीमा में पूर्ण करने के लिए निरंतर प्रयास किए जा रहे हैं। यह पहल भारतीय रेल की आधुनिक, तेज़ और विश्वसनीय रेल सेवाएँ प्रदान करने की प्रतिबद्धता को दर्शाती है।

प्रभावित ट्रेनों का विवरण निम्नानुसार है:

पूर्णत: रद्द ट्रेनें

1.ट्रेन संख्या 19405/19406 पालनपुर-गांधीधाम–पालनपुर एक्सप्रेस 13 फरवरी 2026 तक निरस्त रहेगी।

2.ट्रेन संख्या 12965 बांद्रा टर्मिनस–भुज एक्सप्रेस 10 फरवरी 2026 को निरस्त रहेगी।

3.ट्रेन संख्या 12960 भुज–बांद्रा टर्मिनस एक्सप्रेस 09 फरवरी 2026 को निरस्त रहेगी।

4.ट्रेन संख्या 09415/09416 बांद्रा टर्मिनस-गांधीधाम–बांद्रा टर्मिनस स्पेशल 12 फरवरी 2026 को निरस्त रहेगी।

5.ट्रेन संख्या 22952 गांधीधाम–बांद्रा टर्मिनस एक्सप्रेस 12 फरवरी 2026 को निरस्त रहेगी।

6.ट्रेन संख्या 22951 बांद्रा टर्मिनस–गांधीधाम एक्सप्रेस 13 फरवरी 2026 को निरस्त रहेगी।

7.ट्रेन संख्या 09010 भुज–बांद्रा टर्मिनस स्पेशल 09 फरवरी 2026 को निरस्त रहेंगी।

8.ट्रेन संख्या 09011 बांद्रा टर्मिनस–भुज स्पेशल 10 फरवरी 2026 को निरस्त रहेंगी।

9.ट्रेन संख्या 09012 भुज–बांद्रा टर्मिनस स्पेशल 11 फरवरी 2026 को निरस्त रहेंगी।

आंशिक निरस्त ट्रेनें

1.ट्रेन संख्या 20908 भुज-दादर सयाजी नगरी एक्सप्रेस 9 फरवरी 2026 को भुज-गांधीधाम के बीच आंशिक निरस्त रहेगी।

2.ट्रेन संख्या 22955 बांद्रा टर्मिनस-भुज कच्छ एक्सप्रेस 9 फरवरी 2026 को गांधीधाम और भुज के बीच आंशिक निरस्त रहेगी।

3.ट्रेन संख्या 22956 भुज-बांद्रा टर्मिनस कच्छ एक्सप्रेस 10 फरवरी 2026 को भुज-गांधीधाम के बीच आंशिक निरस्त रहेगी।

4.ट्रेन संख्या 14321/14311 बरेली–भुज एक्सप्रेस 09 फरवरी 2026 को गांधीधाम और भुज के बीच आंशिक निरस्त रहेगी तथा 10 और 11 फरवरी 2026 को सामाख्याली और भुज के बीच आंशिक निरस्त रहेगी।

5.ट्रेन संख्या 14322/14312 भुज–बरेली एक्सप्रेस 10 फरवरी 2026 को भुज-गांधीधाम के बीच आंशिक निरस्त रहेगी तथा 11 और 12 फरवरी 2026 को भुज-सामाख्याली के बीच आंशिक निरस्त रहेगी।

6.ट्रेन संख्या 22903 बांद्रा टर्मिनस–भुज एसी एक्सप्रेस 11 फरवरी 2026 को अहमदाबाद और भुज के बीच आंशिक निरस्त रहेगी।

7.ट्रेन संख्या 16336 नागरकोइल–गांधीधाम एक्सप्रेस 10 फरवरी 2026 को अहमदाबाद और गांधीधाम के बीच आंशिक निरस्त रहेगी।

8.ट्रेन संख्या 22904 भुज-बांद्रा टर्मिनस एसी एक्सप्रेस 9 फरवरी 2026 को भुज और गांधीधाम के बीच आंशिक निरस्त रहेगी तथा 12 फरवरी 2026 को भुज और अहमदाबाद के बीच आंशिक निरस्त रहेगी।

9. ट्रेन संख्या 94801 अहमदाबाद–भुज नमोभारत एक्सप्रेस 10 फरवरी 2026 तक गांधीधाम और भुज के बीच आंशिक निरस्त रहेगी तथा 11 और 12 फरवरी 2026 को ध्रांगध्रा और भुज के बीच आंशिक निरस्त रहेगी।

10. ट्रेन संख्या 94802 भुज-अहमदाबाद नमोभारत एक्सप्रेस 11 फरवरी 2026 तक भुज और गांधीधाम के बीच आंशिक निरस्त रहेगी तथा 12 और 13 फरवरी 2026 को भुज और धांगध्रा के बीच आंशिक निरस्त रहेगी।

11. ट्रेन संख्या 20983 भुज–दिल्ली सराय रोहिल्ला एक्सप्रेस 10 फरवरी 2026 को भुज-गांधीधाम के बीच आंशिक निरस्त रहेगी।

12. ट्रेन संख्या 11092 पुणे-भुज एक्सप्रेस 09 फरवरी 2026 को गांधीधाम-भुज के बीच आंशिक निरस्त रहेगी।

13. ट्रेन संख्या 11091 भुज–पुणे एक्सप्रेस 11 फरवरी 2026 को भुज-गांधीधाम के बीच आंशिक निरस्त रहेगी।

14. ट्रेन संख्या 22483 भगत की कोठी–गांधीधाम एक्सप्रेस 10,11 और 12 फरवरी 2026 को भीलड़ी-गांधीधाम के बीच आंशिक निरस्त रहेगी।

15. ट्रेन संख्या 22484 गांधीधाम-भगत की कोठी एक्सप्रेस 11,12 और 13 फरवरी 2026 को गांधीधाम-भीलड़ी के बीच आंशिक निरस्त रहेगी।

मार्ग परिवर्तित ट्रेनें

- ट्रेन संख्या 20907 दादर-भुज सयाजी नगरी एक्सप्रेस 9 और 10 फरवरी 2026 को परिवर्तित मार्ग वाया आदिपुर-गांधीधाम केबिन-भीमासर के रास्ते चलेगी। इस दौरान यह ट्रेन गांधीधाम स्टेशन पर नहीं जाएगी।
- ट्रेन संख्या 20908 भुज-दादर सयाजी नगरी एक्सप्रेस 10,11 और 12 फरवरी 2026 को परिवर्तित मार्ग वाया भीमासर-गांधीधाम केबिन-आदिपुर के रास्ते चलेगी। इस दौरान यह ट्रेन गांधीधाम स्टेशन पर नहीं जाएगी।
- ट्रेन संख्या 22955 दादर-भुज सयाजी नगरी एक्सप्रेस 10 और 11 फरवरी 2026 को परिवर्तित मार्ग वाया भीमासर-गांधीधाम केबिन-आदिपुर के रास्ते चलेगी। इस दौरान यह ट्रेन गांधीधाम स्टेशन पर नहीं जाएगी।
- ट्रेन संख्या 22956 भुज-बांद्रा टर्मिनस कच्छ एक्सप्रेस 9,11 और 12 फरवरी 2026 को परिवर्तित मार्ग वाया आदिपुर-गांधीधाम केबिन-भीमासर के रास्ते चलेगी। इस दौरान यह ट्रेन गांधीधाम स्टेशन पर नहीं जाएगी।
- ट्रेन संख्या 20984 दिल्ली सराय रोहिल्ला-भुज एक्सप्रेस 11 फरवरी 2026 को परिवर्तित मार्ग वाया भीमासर-गांधीधाम केबिन-आदिपुर के रास्ते चलेगी। इस दौरान यह ट्रेन गांधीधाम स्टेशन पर नहीं जाएगी।

यात्रियों से अनुरोध है कि उपरोक्त परिवर्तन को ध्यान में रखकर यात्रा करे। ट्रेनों के ठहराव, समय एवं संरचना से संबंधित विस्तृत जानकारी के लिए यात्री कृपया www.enquiry.indianrail.gov.in पर जाकर अवलोकन कर सकते हैं।

हफ्ते की शुरुआत में शेयर बाजार का दमदार आगाज़ निवेशकों की झोली में आए 5.88 लाख करोड़ रुपये

जीएनएस)। नई दिल्ली। सप्ताह के पहले कारोबारी दिन घरेलू शेयर बाजार ने मजबूती और भरोसे का ऐसा संकेत दिया, जिसने निवेशकों के चेहरे पर मुस्कान लौटा दी। दिनभर के उतार-चढ़ाव के बावजूद बाजार की चाल सकारात्मक बनी रही और अंत में सेंसेक्स व निफ्टी दोनों ही पूरे दमखम के साथ हरे निशान पर बंद हुए। मजबूत खरीदारी, बेहतर वैश्विक संकेतों और घरेलू स्तर पर सेक्टोरल सपोर्ट के चलते बाजार ने निवेशकों को एक ही दिन में लाखों करोड़ रुपये का फायदा पहुंचाया। कारोबार समाप्त होने पर बीएसई सेंसेक्स 485.35 अंकों की बढ़त के साथ 84,065.75 के स्तर पर बंद हुआ, जबकि एनएसई निफ्टी 173.60 अंक चढ़कर 25,867.30 पर पहुंच गया। प्रतिशत के हिसाब से देखा जाए तो सेंसेक्स में 0.58 फीसदी और निफ्टी में 0.68 फीसदी की तेजी दर्ज की गई। यह तेजी केवल बड़े शेयरों तक सीमित नहीं रही, बल्कि बाजार की चौड़ाई यानी ब्रॉडर मार्केट में भी इसका असर साफ दिखाई दिया, जिसने निवेशकों के भरोसे को और मजबूत किया।

दिनभर के कारोबार में लगभग सभी सेक्टरों ने बाजार को सहारा दिया। पब्लिक सेक्टर एंटरप्राइज इंडेक्स को छोड़ दिया जाए तो बाकी सभी प्रमुख सेक्टर्स हरे निशान में नजर आए। खासतौर पर कैपिटल गुड्स, कंज्यूमर ड्यूरेबल्स और हेल्थकेयर शेयरों में जबरदस्त खरीदारी देखने को मिली। इन सेक्टर्स में आई तेजी ने यह संकेत दिया कि निवेशक न केवल शॉर्ट टर्म बल्कि लॉन्ग टर्म ग्रोथ को लेकर भी आश्वस्त नजर आ रहे हैं। इसके अलावा बैंकिंग, आईटी, ऑटो, एफएमसीजी, मेटल, ऑयल एंड गैस और टेक्नोलॉजी सेक्टरों ने भी बाजार को मजबूती देने में अहम भूमिका निभाई। बाजार की इस रफ्तार का सबसे बड़ा फायदा मिडकैप और स्मॉलकैप शेयरों में देखने को मिला। मिडकैप इंडेक्स में 1.60 फीसदी और स्मॉलकैप इंडेक्स में करीब 2.60 फीसदी की उछाल दर्ज की गई। यह तेजी इस बात का संकेत है कि निवेशकों की जोखिम लेने की क्षमता बढ़ रही है और वे व्यापक बाजार में भी भरोसा जता रहे हैं। छोटे और मझोले शेयरों में आई यह मजबूती अक्सर बाजार की सेहत के लिए सकारात्मक मानी जाती है।

इस तेजी का सीधा असर निवेशकों की संपत्ति पर पड़ा। बीएसई में सूचीबद्ध सभी कंपनियों का कुल बाजार पूंजीकरण बढ़कर 473.19 लाख करोड़ रुपये (अनंतिम) पर पहुंच गया, जबकि पिछले कारोबारी सत्र में यह 467.31 लाख करोड़ रुपये था। यानी महज एक दिन में निवेशकों की संपत्ति में करीब 5.88 लाख करोड़ रुपये का इजाफा हुआ। यह आंकड़ा बाजार में आई मजबूती की गहराई को साफ तौर पर दर्शाता है।

सोना वायदा में 1349 रुपये और चांदी वायदा में 3949 रुपये की वृद्धि: क्रूड ऑयल वायदा में 31 रुपये की नरमी

जीएनएस)। मुंबई: देश के अग्रणी कमोडिटी डेरिवेटिव्स एक्सचेंज एमसीएक्स पर कमोडिटी वायदा, ऑप्शंस और इंडेक्स फ्यूचर्स में 137101.54 करोड़ रुपये का टर्नओवर दर्ज हुआ। कमोडिटी वायदाओं में 27828.72 करोड़ रुपये का कारोबार हुआ, जबकि कमोडिटी ऑप्शंस में 109271.88 करोड़ रुपये का नॉशनल टर्नओवर हुआ। बुलियन इंडेक्स बुलडेक्स का फरवरी वायदा 39026 पॉइंट के स्तर पर कारोबार हो रहा था। कमोडिटी ऑप्शंस में कुल प्रीमियम टर्नओवर 3027.2 करोड़ रुपये का हुआ।

कीमती धातुओं में सोना-चांदी के वायदाओं में 22286.46 करोड़ रुपये की खरीद बेच की गई। एमसीएक्स सोना अप्रैल वायदा सत्र के आरंभ में 156000 रुपये के भाव पर खूलकर, 158500 रुपये के दिन के उच्च और 155546 रुपये के नीचले स्तर को छूकर, 155451 रुपये के पिछले बंद के सामने 1349 रुपये या 0.87 फीसदी की बढ़त के साथ 156800 रुपये प्रति 10 ग्राम के भाव पर कारोबार कर रहा था। गोल्ड-गिनी फरवरी वायदा 1204 रुपये या 0.94 फीसदी तेज होकर यह कॉन्ट्रैक्ट 128921 रुपये प्रति 8 ग्राम पर आ गया। गोल्ड-पेटल फरवरी वायदा 137 रुपये या 0.86 फीसदी तेज होकर यह कॉन्ट्रैक्ट 16085 रुपये प्रति 1 ग्राम पर आ गया। सोना-मिनी मार्च वायदा 154825 रुपये पर खूलकर, ऊपर में 157000 रुपये और नीचे में 154224 रुपये पर पहुंचकर, 1052 रुपये या 0.68 फीसदी तेज होकर यह कॉन्ट्रैक्ट 154983 रुपये प्रति 10 ग्राम पर आ गया। गोल्ड-टेन फरवरी वायदा प्रति 10 ग्राम 158634 रुपये पर खूलकर, ऊपर में 160000 रुपये और नीचे में 158000 रुपये पर पहुंचकर, 157335 रुपये के पिछले बंद के सामने 1011 रुपये या 0.64 फीसदी तेज होकर यह कॉन्ट्रैक्ट 158346 रुपये प्रति 10 ग्राम पर आ गया। चांदी के वायदाओं में चांदी मार्च वायदा 259887 रुपये पर खूलकर, ऊपर में 264885 रुपये और नीचे में 251544 रुपये पर पहुंचकर, 249892 रुपये के पिछले बंद के सामने 3949 रुपये या 1.58 फीसदी तेज होकर यह कॉन्ट्रैक्ट 253841 रुपये प्रति किलो पर आ गया। इनके अलावा चांदी-मिनी फरवरी वायदा 4382 रुपये या 1.7 फीसदी की बढ़त के साथ 262195 रुपये प्रति किलो के भाव पर कारोबार कर रहा था। जबकि चांदी-माइक्रो फरवरी वायदा 4577 रुपये या 1.77 फीसदी की तेजी के संग 262481 रुपये प्रति किलो के भाव पर पहुंचा।

- कमोडिटी वायदाओं में 27828.72 करोड़ रुपये और कमोडिटी ऑप्शंस में 109271.88 करोड़ रुपये का दर्ज हुआ टर्नओवर : सोना-चांदी के वायदाओं में 22286.46 करोड़ रुपये का हुआ कारोबार : बुलियन इंडेक्स बुलडेक्स फ्यूचर्स 39026 पॉइंट के स्तर पर

मेटल वर्ग में 3439.07 करोड़ रुपये के ट्रेड दर्ज हुए। तांबा फरवरी वायदा 1.15 रुपये या 0.09 फीसदी औंधकर 1241.7 रुपये प्रति किलो पर आ गया। जबकि जस्ता फरवरी वायदा 2.9 रुपये या 0.89 फीसदी औंधकर 322.75 रुपये प्रति किलो पर आ गया। इसके सामने एल्यूमीनियम फरवरी वायदा 2 रुपये या 0.64 फीसदी औंधकर 310.2 रुपये प्रति किलो पर आ गया। जबकि सीसा फरवरी वायदा 1.2 रुपये या 0.63 फीसदी औंधकर 188.65 रुपये प्रति किलो पर आ गया।

इन जिंसों के अलावा कारोबारियों ने एनर्जी सेगमेंट में 1983.79 करोड़ रुपये के सौदे किए। एमसीएक्स क्रूड ऑयल फरवरी वायदा 5750 रुपये पर खूलकर, ऊपर में 5801 रुपये और नीचे में 5682 रुपये पर पहुंचकर, 31 रुपये या 0.53 फीसदी औंधकर 5793 रुपये प्रति बैरल पर आ गया। जबकि क्रूड ऑयल-मिनी फरवरी वायदा 31 रुपये या 0.53 फीसदी की गिरावट के साथ 5795 रुपये प्रति बैरल के भाव पर कारोबार कर रहा था। इनके अलावा नैचुरल गैस फरवरी वायदा सत्र के आरंभ में 315 रुपये के भाव पर खूलकर, 315 रुपये के दिन के उच्च और 287.7 रुपये के नीचले स्तर को छूकर, 320.2 रुपये के पिछले बंद के सामने 31.2 रुपये या 9.74 फीसदी गिरकर 289 रुपये प्रति एमएमबीटीयू हुआ। जबकि नैचुरल गैस-मिनी फरवरी वायदा 30.6 रुपये या 9.57 फीसदी औंधकर 289.3 रुपये प्रति एमएमबीटीयू पर आ गया। कृषि जिंसों में मेंथा ऑयल फरवरी वायदा 975 रुपये पर खूलकर, 8.7 रुपये या 0.89 फीसदी घटकर 969 रुपये प्रति किलो के भाव पर ट्रेड हो रहा था।

कारोबार की दृष्टि से एमसीएक्स पर सोना के विभिन्न अनुबंधों में 11939.02 करोड़ रुपये और चांदी के विभिन्न अनुबंधों में 10347.44 करोड़ रुपये की खरीद बेच की गई। इसके अलावा तांबा के वायदाओं में 2863.97 करोड़ रुपये, एल्यूमीनियम और एल्यूमीनियम-मिनी के वायदाओं में 239.29 करोड़ रुपये, सीसा और सीसा-मिनी के वायदाओं में 18.75 करोड़ रुपये, जस्ता और जस्ता-मिनी के वायदाओं में 314.85 करोड़ रुपये का कारोबार हुआ।

इन जिंसों के अलावा क्रूड ऑयल और क्रूड ऑयल-मिनी के वायदाओं में 820.29 करोड़ रुपये के ट्रेड दर्ज हुए। जबकि नैचुरल गैस और नैचुरल गैस-मिनी के वायदाओं में 1154.55 करोड़ रुपये का कारोबार हुआ। मेंथा ऑयल के वायदा में 3.22 करोड़ रुपये की खरीद बेच की गई। जबकि कॉटन केंडी के वायदाओं में 0.07 करोड़ रुपये का कारोबार हुआ।

ओपन इंटरेस्ट सोना के वायदाओं में 9257 लोट, सोना-मिनी के वायदाओं में 61619 लोट, गोल्ड-गिनी के वायदाओं में 31949 लोट, गोल्ड-पेटल के वायदाओं में 416975 लोट और गोल्ड-टेन के वायदाओं में 51818 लोट के स्तर पर था। जबकि चांदी के वायदाओं में 8986 लोट, चांदी-मिनी के वायदाओं में 20152 लोट और चांदी-माइक्रो वायदाओं में 62545 लोट के स्तर पर था। क्रूड ऑयल के वायदाओं में 17281 लोट और नैचुरल गैस के वायदाओं में 18894 लोट के स्तर पर था।

इंडेक्स फ्यूचर्स में बुलडेक्स फरवरी वायदा 38658 पॉइंट पर खूलकर, 39300 के उच्च और 38658 के नीचले स्तर को छूकर, 1493 पॉइंट बढ़कर 39026 पॉइंट के स्तर पर कारोबार हो रहा था।

कमोडिटी ऑप्शंस ऑन फ्यूचर्स में क्रूड ऑयल फरवरी 5700 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का कॉल ऑप्शन प्रति बैरल 33.3 रुपये की गिरावट के साथ 240.9 रुपये हुआ। जबकि नैचुरल गैस फरवरी 300 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का कॉल ऑप्शन प्रति एमएमबीटीयू 18.1 रुपये की गिरावट के साथ 20.4 रुपये हुआ।

सोना फरवरी 180000 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का कॉल ऑप्शन प्रति 10 ग्राम 566 रुपये की गिरावट के साथ 1153 रुपये हुआ। इसके सामने चांदी फरवरी 440000 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का कॉल ऑप्शन प्रति किलो 932 रुपये की गिरावट के साथ 1004 रुपये हुआ। तांबा फरवरी 1300 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का कॉल ऑप्शन प्रति किलो 6.73 रुपये की गिरावट के साथ 19.65 रुपये हुआ। जस्ता फरवरी 340 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का कॉल ऑप्शन प्रति किलो 1.3 रुपये की गिरावट के साथ 2.32 रुपये हुआ।

पुट ऑप्शंस में क्रूड ऑयल फरवरी 5700 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का पुट ऑप्शन प्रति बैरल 80 पैसे के सुधार के साथ 152.8 रुपये हुआ। जबकि नैचुरल गैस फरवरी 290 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का पुट ऑप्शन प्रति एमएमबीटीयू 10.6 रुपये की बढ़त के साथ 24.75 रुपये हुआ।

सोना फरवरी 140000 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का पुट ऑप्शन प्रति 10 ग्राम 1009 रुपये की गिरावट के साथ 1466 रुपये हुआ। इसके सामने चांदी फरवरी 200000 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का पुट ऑप्शन प्रति किलो 2142 रुपये की गिरावट के साथ 3939 रुपये हुआ। तांबा फरवरी 1200 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का पुट ऑप्शन प्रति किलो 4.42 रुपये की गिरावट के साथ 21.04 रुपये हुआ। जस्ता फरवरी 320 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का पुट ऑप्शन प्रति किलो 1.33 रुपये की गिरावट के साथ 6.99 रुपये हुआ।

भावनगर मंडल के सतर्क लोको पायलट ने 10 सिंहों के झुंड को ट्रेन की चपेट में आने से बचाया

जीएनएस)। भावनगर रेलवे मंडल द्वारा सिंहों/वन्यजीवों की सुरक्षा के लिए निरंतर प्रभावी प्रयास किए जा रहे हैं। मंडल के निर्देशानुसार ट्रेनों का संचालन करने वाले लोको पायलट निर्धारित गति का पालन करते हुए विशेष सतर्कता के साथ अपने दायित्वों का निर्वहन कर रहे हैं। भावनगर मंडल के लोको पायलटों की सतर्कता एवं वन विभाग के फॉरेस्ट ट्रैकरों के समन्वय से पिछले वित्तीय वर्ष 2024-25 में कुल 159 सिंहों की जान बचाई जा चुकी है। वहीं, वर्तमान वित्तीय वर्ष 2025-26 में अब तक 101 सिंहों को सुरक्षित बचाया गया है।

भावनगर मंडल के वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक श्री अतुल कुमार त्रिपाठी ने बताया कि दिनांक 09 फरवरी, 2026 (सोमवार) को लोको पायलट श्री रामावतार मीना, मुख्यालय-जूनागढ़ तथा सहायक लोको पायलट श्री सोनू शर्मा, मुख्यालय-जूनागढ़ ने सासणगीर–कांसियानेश सेक्शन में किलोमीटर संख्या 117/03–117/01 के बीच रेलवे ट्रैक पर अचानक 10 सिंहों के झुंड को देखा। तत्पश्चात उन्होंने ट्रेन संख्या 52955 वेरावल–जूनागढ़ यात्री गाड़ी को तत्काल इमरजेंसी ब्रेक लगाकर सुरक्षित रूप से रोक लिया।

लोको पायलट द्वारा ट्रेन मैनेजर (गार्ड) श्री संजय दिक्षित, मुख्यालय-जूनागढ़ को तुरंत सूचना दी गई। वन विभाग के फॉरेस्ट ट्रैकर श्री जे. जी. परमार ट्रेन में हीं मौजूद थे। उनके द्वारा सभी सिंहों को सुरक्षित रूप से रेलवे ट्रैक से हटाया गया। स्थिति सामान्य पाए जाने के उपरांत लोको पायलट को ट्रेन के प्रस्थान की अनुमति दी गई, जिसके बाद ट्रेन को सावधानीपूर्वक गंतव्य की ओर रवाना किया गया।

इस घटना की जानकारी प्राप्त होने पर लोको पायलटों द्वारा किए गए इस सराहनीय एवं संवेदनशील कार्य के लिए मंडल रेल प्रबंधक श्री दिनेश वर्मा, अपर मंडल रेल प्रबंधक श्री हिमाँशु शर्मा एवं अन्य अधिकारियों द्वारा प्रशंसा व्यक्त की गई।

आधुनिक कृषि पद्धतियों द्वारा उत्पादकता को प्रोत्साहन

जीएनएस)। कृषि क्षेत्र में उत्पादकता बढ़ाने के लिए किसान अधिक से अधिक आधुनिक कृषि पद्धतियाँ अपना रहे हैं। मशीनीकरण, उन्नत संकर (हाइब्रिड) किस्मों, प्रमाणित बीज, कीटनाशकों तथा उर्वरकों का ड्रोन आधारित छिड़काव और बीज को मजबूत बनाने की तकनीकों द्वारा उपज में वृद्धि हो रही है। टपक सिंचाई तथा छिड़काव जैसी सिंचाई पद्धतियों, ऑर्गेनिक खादों तथा मिश्र एवं अंतरफसल खेती से संसाधनों के उपयोग में सुधार हो रहा है। थ्रेशर, कम्बाइन हार्वेस्टर, ट्रैक्टर तथा ग्रेडर जैसे उपकरणों से खेती का कामकाज आसान हुआ है, मजदूरी घटी है और कार्यक्षमता बढ़ी है। एकीकृत, प्राकृतिक एवं जैविक खेती से दलहन उत्पादन में भी वृद्धि हुई है।

पश्चिम रेलवे के महाप्रबंधक ने अहमदाबाद मंडल के 5 कर्मचारियों को संरक्षा में उत्कृष्ट कार्य के लिए सम्मानित किया

जीएनएस)। पश्चिम रेलवे के महाप्रबंधक (प्रभारी) श्री प्रदीप कुमार ने पश्चिम रेलवे मुख्यालय, मुंबई में आयोजित कार्यक्रम में अहमदाबाद मंडल के 5 कर्मचारियों को रेल संरक्षा में उत्कृष्ट कार्य, सतर्कता और सुरक्षित ट्रेन संचालन में महत्वपूर्ण योगदान के लिए "मैन ऑफ द मंथ" (दिसंबर–2025) संरक्षा पुरस्कार से सम्मानित किया। इन कर्मचारियों की सजगता से संभावित दुर्घटनाएँ टलीं और रेल संपत्ति की सुरक्षा सुनिश्चित हुई।

सम्मानित कर्मचारियों का विवरण:

1. श्री अनिल कुमार, फिटर-III (C&W), भीलड़ी: 11 दिसंबर 2025 को ड्यूटी के दौरान रोलिंग इन परीक्षण करते समय उन्होंने एक कोच का एयर स्प्रिंग दबा हुआ पाया। जांच में एयर प्रेशर न होना और कॉक बंद होना पाया गया। उन्होंने तुरंत उसे सही किया, लीकेज जांची और गाड़ी को सुरक्षित रूप से आगे बढ़ाने के लिए C&W स्टाफ द्वारा एस्कॉर्ट की व्यवस्था करवाई तथा कंट्रोल को सूचना दी।
2. श्री ग्रैश कुमार डी., लोको पायलट, अहमदाबाद: 8 दिसंबर 2025 को ट्रेन संख्या 19223 चलाते समय खोडियार स्टेशन के पास ट्रैक पर भारी लोहे का क्लैम्प लगा देखा। उन्होंने तुरंत ट्रेन रोकी। सहायक लोको पायलट ने क्लैम्प हटाया। जांच के बाद ट्रेन को सावधानीपूर्वक आगे बढ़ाया गया। उनकी सतर्कता से एक बड़ी दुर्घटना टली।
3. श्री साजीद अहमद, पॉइंट्समैन, अहमदाबाद: 12 दिसंबर 2025 को एक मालगाड़ी गुजरते समय उन्होंने एक वैगन के ब्रेक शू में आग और चिंगारी देखी। उन्होंने तुरंत लाल सिग्नल दिखाकर गाड़ी रुकवाई। स्टेशन स्टाफ की मदद से आग बुझाई गई और आवश्यक कार्रवाई के बाद गाड़ी रवाना हुई।
4. श्री रवि कुमार मीना, गेटमैन, जसाली: 17 दिसंबर 2025 को उन्होंने गुजरती गाड़ी के एक वैगन में चिंगारी देखी और तुरंत सूचना दी। जांच में हॉट एक्सल पाया गया। सहायता इंजन मंगवाकर सुरक्षित तरीके से गाड़ी को स्टेशन लाया गया और सिक वैगन अलग किया गया। उनकी सतर्कता सराहनीय रही।
5. श्री दीपक यादव, स्टेशन मास्टर, भद्रेश्वर रोड: 18 दिसंबर 2025 को रन-थ्रू गाड़ी का निरीक्षण करते समय उन्होंने एक वैगन से चिंगारी और गंध महसूस की। उन्होंने तुरंत कंट्रोल और अगले स्टेशन को सूचना दी। जांच में ब्रेक ब्लॉक जाम पाया गया। वैगन को अलग कर सुरक्षित संचालन सुनिश्चित किया गया।

शहरी विकास वर्ष में गुजरात बना टिकाऊ शहरी आयोजन तथा विकास का मॉडल

- 'कैच द रेन' पहल अंतर्गत वर्षा जल संग्रह क्षमता में 4.19 लाख किलोलीटर की वृद्धि हुई
- महानगर पालिका तथा नगर पालिका क्षेत्रों में 90 लाख पेड़-पौधे लगाए गए, शहरी क्षेत्रों में 240 हेक्टेयर से अधिक नए ग्रीन स्पेस विकसित किए जाएंगे
- राज्य में शहरी स्वच्छता तथा कूड़ा प्रबंधन के लिए 2,756 करोड़ रुपए से अधिक की लागत से 1,823 से अधिक परियोजनाओं को मंजूरी

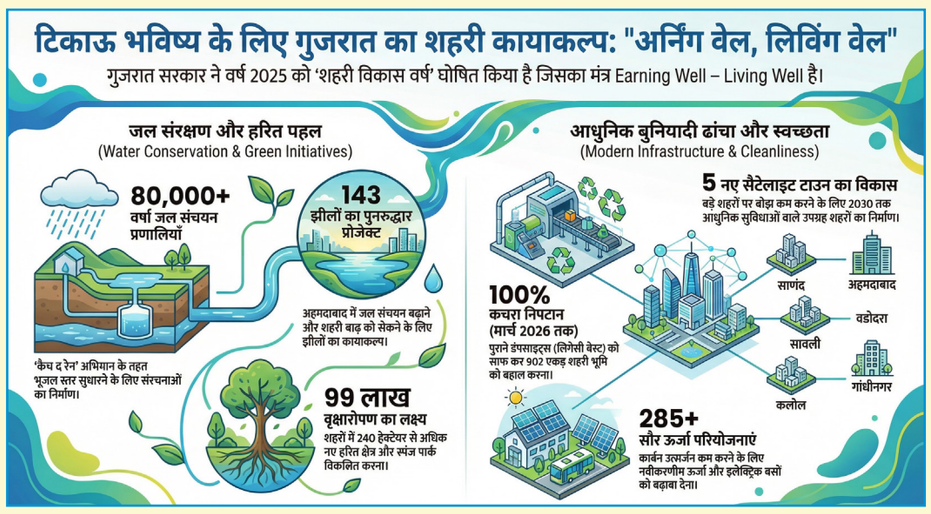

जीएनएस)। गांधीनगर : गुजरात सरकार ने 'अर्निंग वेल, लिविंग वेल' संकल्प अंतर्गत गुजरात के शहरों को श्रेष्ठ सुविधायुक्त बनाने तथा नागरिकों को उच्च गुणवत्तायुक्त जीवन प्रदान करने के उद्देश्य के साथ वर्ष 2025 को 'शहरी विकास वर्ष' घोषित किया है। शहरी विकास वर्ष 2025 अंतर्गत राज्य सरकार का टिकाऊ शहरी आयोजन तथा विकास का लक्ष्य है। शहरी विकास वर्ष के दौरान राज्य सरकार बड़े पैमाने पर वृक्षारोपण शुरू कर नए ग्रीन स्पेस के निर्माण एवं 100 प्रतिशत लिगेसी वेस्ट की निकासी के लिए प्रतिबद्ध है।

शहरी क्षेत्रों में 240 हेक्टेयर से अधिक नए ग्रीन स्पेस बनाए जाएंगे

गुजरात ने हमेशा टिकाऊ विकास को प्रोत्साहन दिया है, जिसके हिस्से के रूप में राज्य के शहरी क्षेत्रों में ग्रीन कवर बढ़ाने पर विशेष बल दिया गया है। शहरी विकास वर्ष के दौरान राज्य के विभिन्न शहरी क्षेत्रों में 240 हेक्टेयर से अधिक नए ग्रीन स्पेस विकसित किए जाएंगे; जिनमें बाग-बगीचे, वर्षा जल को भूमि में उतारने तथा भूमिगत जल रिचार्ज करने के लिए स्पंज पार्क्स एवं अर्बन फॉरेस्ट आदि शामिल हैं। हाल में इसके लिए विभिन्न परियोजनाओं का क्रियान्वयन विभिन्न चरणों में है। शहरी विकास वर्ष के दौरान राज्य सरकार द्वारा कुल 340 से अधिक परियोजनाएँ पूर्ण करने का लक्ष्य रखा गया है, जिनमें से 146 परियोजनाएँ पूरी हो चुकी हैं।

कैच द रेन : वर्षा जल संग्रह क्षमता में 4.19 लाख किलोलीटर की वृद्धि

गुजरात सरकार ने शहरी क्षेत्रों में वर्षा जल संग्रह की क्षमता बढ़ाने के लिए कैच द रेन पहल शुरू की है। इसके अंतर्गत राज्य के 17 महानगर पालिका क्षेत्रों तथा 152 नगर पालिका क्षेत्रों में कुल लगभग 2,900 रेन वॉटर हार्वेस्टिंग सिस्टम विकसित किए गए हैं; जिसके कारण शहरों में वर्षा जल का संग्रह करने की क्षमता में लगभग 4.19 लाख किलोलीटर की वृद्धि हुई है। इसके अलावा; 2,603 परियोजनाएँ हाल में कार्यान्वित हैं, तो 1,230 परियोजनाएँ निविदा के चरण में हैं तथा 6,642 नई परियोजनाएँ आयोजनाधीन हैं। इसके साथ ही; तालाबों के रीडेवलपमेंट एवं पुनर्स्थापना पर भी विशेष ध्यान दिया गया है। शहरी विकास वर्ष 2025 अंतर्गत कुल 140 लेकफ्रंट प्रोजेक्ट्स का लक्ष्य निर्धारित किया गया है; जिनमें 54 प्रोजेक्ट पूरे हो चुके हैं, 57 चल रहे हैं, 9 निविदा चरण में हैं और 20 प्रोजेक्ट आयोजनाधीन हैं।

राज्य में टिकाऊ विकास को प्रोत्साहन देने के लिए विभिन्न परियोजनाएँ

राज्य सरकार ने टिकाऊ विकास को प्रोत्साहन देने के लिए राज्यभर में 285 से अधिक सौर परियोजनाएँ (सोलर प्रोजेक्ट्स) शुरू करने का लक्ष्य रखा है, जिससे शहरों में नवीकरणीय ऊर्जा का उपयोग बढ़ाकर कार्बन उत्सर्जन कम किया जा सके। इसके अतिरिक्त; मलिन जल के पुनरुपयोग के लिए 20 रीयूज ऑफ ट्रीटेड वेस्ट वॉटर (आरटीडब्लूडब्लू) प्रोजेक्ट्स कार्यान्वित किए जा रहे हैं, जिसमें दैनिक अनुमानित 656 मिलियन लीटर पानी पुनः उपयोग के लिए उपलब्ध बनेगा। इसी प्रकार; शहरी प्रदूषण के विरुद्ध वायु गुणवत्ता सुधारने के लिए शहरी विकास विभाग का राज्य की सभी महानगर पालिकाओं को समाविष्ट करने वाले 'क्लीन एयर एक्शन प्लान्स' को लॉन्च करने का लक्ष्य है। राज्य की शेष चार बड़ी महानगर पालिकाओं भावनगर, जामनगर, जूनागढ़ तथा गांधीनगर के लिए भी क्लीन एयर एक्शन प्लान तैयार किया गया है।

महानगर पालिका तथा नगर पालिका क्षेत्रों में 90 लाख पेड़-पौधों का रोपण पूर्ण

इसके अतिरिक्त; शहरी विकास वर्ष के दौरान राज्य के शहरों को हरियाला बनाने की दिशा में 99 लाख पेड़-पौधे रोपने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। इस लक्ष्य के सापेक्ष अब तक 17 महानगर पालिका क्षेत्रों तथा 152 नगर पालिका क्षेत्रों में लगभग 90 लाख पेड़-पौधों का रोपण किया गया है।

मार्च 2026 तक राज्य के शहरों में 100 प्रतिशत लिगेसी वेस्ट की निकासी का लक्ष्य

उल्लेखनीय है कि गुजरात सरकार शहरों में वर्षों से पड़े कूड़े-कचरे की वैज्ञानिक निकासी द्वारा पर्यावरण सुरक्षा, जन स्वास्थ्य तथा शहरी विकास को मजबूत बनाने के लिए निरंतर प्रयासरत है। इसके अंतर्गत राज्य सरकार ने मार्च 2026 तक राज्य के शहरों में 100 प्रतिशत लिगेसी वेस्ट की निकासी का लक्ष्य निर्धारित किया है। राज्य के शहरी क्षेत्रों में कुल 304.09 लाख मैट्रिक टन लिगेसी वेस्ट चिह्नित किया गया है; जिसमें से अब तक 281.802 लाख मैट्रिक टन कूड़े की वैज्ञानिक तरीके से निकासी की गई है।

इसके अतिरिक्त; शहरी स्वच्छता एवं कूड़ा प्रबंधन को प्राथमिकता देते हुए 2,756 करोड़ रुपए से अधिक की लागत से 1,823 से अधिक परियोजनाओं पर कार्य किया जाएगा। राज्यभर में शहरों के सार्वजनिक स्थलों से गंदगी तथा अस्वच्छता को दूर करने के लिए 1,533 गार्बेज वल्नरेबल पॉइंट्स (जीवीपी) की पहचान कर उसकी निकासी का लक्ष्य रखा गया है। टिकाऊ शहरी आयोजन एवं विकास को प्रोत्साहन देने वाली यह प्रत्येक पहल विकसित गुजरात से विकसित भारत के लक्ष्य को साकार करने की दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी।

10 फरवरी : विश्व दलहन दिवस

चने की उत्पादकता में गुजरात देश में अग्रसर, अरहर उत्पादन में भी श्रेष्ठ प्रदर्शन

- 2021-22 से 2023-24 के दौरान अरहर की औसत उत्पादकता प्रति हेक्टेयर 1199 किलोग्राम तथा चने की औसत उत्पादकता 1795 किलोग्राम दर्ज हुई
- अप्रैल-नवंबर, 2025-26 के दौरान गुजरात ने लगभग 69.98 मिलियन डॉलर के 74,652 मैट्रिक टन दलहन का निर्यात किया
- दलहन का बुवाई क्षेत्र 6.62 लाख हेक्टेयर से बढ़कर 10.89 लाख हेक्टेयर हुआ, तो उत्पादन 6.79 लाख मैट्रिक टन से बढ़कर 15.51 लाख मैट्रिक टन तक पहुँचा
- प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के 'दलहन आत्मनिर्भर मिशन' से गुजरात में दलहन की खेती में उल्लेखनीय वृद्धि हुई

जीएनएस)। गांधीनगर : दलहन की खेती, उत्पादकता तथा उसके समर्थन मूल्य को प्रोत्साहन देने के उद्देश्य से विश्वभर में 10 फरवरी को 'विश्व दलहन दिवस' मनाया जाता है। विश्व में दलहन के सबसे बड़े उत्पादक, उपभोक्ता तथा आयातक देश के रूप में भारत ने प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में 'दलहन आत्मनिर्भर मिशन' शुरू किया है; जो पोषण सुरक्षा एवं आत्मनिर्भरता प्राप्त करने की ओर एक बड़ा कदम है। मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल के नेतृत्व में गुजरात ने इस मिशन में सक्रिय भूमिका निभाते हुए अरहर तथा चना जैसे दलहनों की उत्पादकता में उल्लेखनीय वृद्ध दर्ज कराई है।

अरहर तथा चना उत्पादकता में गुजरात की प्रगति, दलहन निर्यात में भी उल्लेखनीय वृद्धि

गुजरात में अरहर तथा चने की उत्पादकता में वृद्धि हुई है। 2021-22 से 2023-24 के दौरान अरहर की उत्पादकता प्रति हेक्टेयर 1199 किलोग्राम तथा चने की उत्पादकता 1795 किलोग्राम दर्ज हुई थी, जबकि 2023-24 में 1714 किलोग्राम चना उत्पादकता के साथ राज्य

ने प्रथम स्थान हासिल किया।

उल्लेखनीय है कि गुजरात विभिन्न प्रकार के दलहनों की खेती करता है; जिनमें चना, मूंग, उड़द, मोठ, अरहर तथा मटर शामिल हैं। राज्य इन दलहनों का निर्यात भी करता है। कृषि एवं प्रसंस्कृत खाद्य उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण (एपेडा) के अनुसार अप्रैल से नवंबर (2025-26) के दौरान गुजरात ने वैश्विक बाजारों में 69.98 मिलियन डॉलर (लगभग 581 करोड़ रुपए) मूल्य के 74,652.82 मैट्रिक टन दहलन का निर्यात किया।

'दलहन आत्मनिर्भर मिशन' से गुजरात में दलहन की खेती में उल्लेखनीय वृद्धि हुई

भारत सरकार के आत्मनिर्भर भारत मिशन से प्रेरित होकर गुजरात में पिछले पाँच वर्षों के दौरान दलहन की खेती में उल्लेखनीय वृद्धि देखने को मिली है। दलहन का कुल बुवाई क्षेत्र 2018-19 में 6.62 लाख हेक्टेयर था, जो 2023-24 में बढ़कर 10.89 लाख हेक्टेयर हुआ है। इसी प्रकार; दलहन का उत्पादन भी लगभग तीन गुना बढ़ा है। 2018-19 में दलहन उत्पादन 6.79 लाख मैट्रिक टन था, जो 2023-24 में बढ़कर 15.51 लाख मैट्रिक टन हुआ है। इनमें चना, मूंग, मोठ तथा उड़द की खेती में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। विशेषकर; चने की बुवाई में अभूतपूर्व वृद्धि देखने को मिली है; जिसमें 2018-19 में 1.73 लाख हेक्टेयर का बुवाई क्षेत्र 2023-24 में बढ़कर 6.22 लाख हेक्टेयर हुआ है, जबकि उत्पादन 2.35 लाख मैट्रिक टन से बढ़कर 10.66 लाख मैट्रिक टन हुआ है।

भारत सरकार का दलहन में आत्मनिर्भरता का मिशन चना, अरहर एवं उड़द की खेती को प्रोत्साहन दे रहा है। मिशन अंतर्गत किसानों को प्रमाणित बीज व सब्सिडी के साथ खेत सम्बद्ध प्रदर्शनियों तथा उत्पादकता में सुधार के लिए विशेष प्रशिक्षण दिया जाता है। इसके अतिरिक्त; अधिक अच्छी उपज के लिए राज्य सरकार ने बीज प्रतिस्थापन दर (एसआरआर) योजना लागू की है, जो यह सुनिश्चित करती है कि किसानों को गुणवत्तायुक्त प्रमाणित बीज मिले।

आधुनिक कृषि पद्धतियों द्वारा उत्पादकता को प्रोत्साहन

कृषि क्षेत्र में उत्पादकता बढ़ाने के लिए किसान अधिक से अधिक आधुनिक कृषि पद्धतियाँ अपना रहे हैं। मशीनीकरण, उन्नत संकर (हाइब्रिड) किस्मों, प्रमाणित बीज, कीटनाशकों तथा उर्वरकों का ड्रोन आधारित छिड़काव और बीज को मजबूत बनाने की तकनीकों द्वारा उपज में वृद्धि हो रही है। टपक सिंचाई तथा छिड़काव जैसी सिंचाई पद्धतियों, ऑर्गेनिक खादों तथा मिश्र एवं अंतरफसल खेती से संसाधनों के उपयोग में सुधार हो रहा है। थ्रेशर, कम्बाइन हार्वेस्टर, ट्रैक्टर तथा ग्रेडर जैसे उपकरणों से खेती का कामकाज आसान हुआ है, मजदूरी घटी है और कार्यक्षमता बढ़ी है। एकीकृत, प्राकृतिक एवं जैविक खेती से दलहन उत्पादन में भी वृद्धि हुई है।

यूपीआई से पीएफ निकासी की राह आसान, ईपीएफओ का नया डिजिटल प्लेटफॉर्म सदस्यों के लिए बनेगा गेमचेंजर

जीएनएस)। नई दिल्ली। कर्मचारी भविष्य निधि संगठन यानी ईपीएफओ अपने करोड़ों अंशधारकों के लिए एक बड़ा और ऐतिहासिक डिजिटल बदलाव लाने की तैयारी में है। रोजमर्रा की जरूरतों से लेकर आपात स्थितियों तक में पीएफ निकासी को लेकर जो जटिलताएं और लंबी प्रक्रिया अब तक लोगों के लिए परेशानी का सबब बनी हुई थीं, वे जल्द ही बीते दिनों की बात हो सकती हैं। ईपीएफओ अप्रैल महीने से एक नया और अत्याधुनिक मोबाइल ऐप लॉन्च करने की दिशा में तेजी से काम कर रहा है, जिसके जरिए सदस्य यूपीआई के माध्यम से सीधे अपने बैंक खाते में पीएफ की राशि ट्रांसफर कर सकेंगे। सूत्रों के अनुसार, श्रम एवं रोजगार मंत्रालय इस डिजिटल प्लेटफॉर्म को इस तरह डिजाइन कर रहा है कि पीएफ से जुड़ी अधिकतर सेवाएं एक ही जगह, एक ही ऐप पर उपलब्ध हों। इस नई व्यवस्था का सबसे बड़ा फायदा यह होगा कि कर्मचारियों को अब पीएफ निकासी के लिए लंबा इंतजार नहीं करना पड़ेगा और न ही बार-बार पोर्टल पर लॉगिन करने या दस्तावेजों की जटिल प्रक्रिया से गुजरने की जरूरत होगी। अनुमान है कि इस सुविधा से देशभर में करीब आठ करोड़ से अधिक ईपीएफओ सदस्य सीधे तौर पर लाभान्वित होंगे।

नई प्रणाली के तहत ईपीएफ खाते की पूरी राशि एक साथ निकालने की बजाय एक संतुलित व्यवस्था अपनाई जाएगी। जानकारी के मुताबिक, ईपीएफ की एक तय राशि को सुरक्षित रखा जाएगा, जबकि शेष पात्र रकम को यूपीआई गेटवे के जरिए निकासी के लिए उपलब्ध कराया जाएगा। इससे न सिर्फ भविष्य की सुरक्षा बनी रहेगी, बल्कि जरूरत पड़ने पर त्वरित रूप से धन उपलब्ध भी हो सकेगा। यह कदम उन कर्मचारियों के लिए खास तौर पर राहत भरा माना जा रहा है, जिन्हें मेडिकल इमरजेंसी, शिक्षा, घर या अन्य जरूरी खर्चों के लिए तुरंत धन की आवश्यकता होती है। नया मोबाइल ऐप सिर्फ पीएफ निकासी तक सीमित नहीं रहेगा, बल्कि इसे एक ऑल-इन-वन डिजिटल प्लेटफॉर्म के रूप में विकसित किया जा रहा है। इसके जरिए सदस्य अपने पीएफ खाते की पासबुक देख सकेंगे, बैलेंस चेक कर सकेंगे, ट्रांसफर की स्थिति जान सकेंगे और अन्य सेवाओं की जानकारी भी रियल टाइम में प्राप्त कर पाएंगे। इससे पारदर्शिता बढ़ेगी और सदस्यों को अपने खाते पर बेहतर नियंत्रण मिलेगा।

राज्यव्यापी डिजिटल इन्फ्रास्ट्रक्चर की दिशा में एक और मील का पत्थर

गांधीनगर में एलन मस्क की स्पेसएक्स की सब्सिडियरी स्टारलिंक तथा गुजरात सरकार के बीच आपसी सहयोग के आशय पत्र (एलओआई) का मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल तथा उप मुख्यमंत्री श्री हर्ष संघवी की उपस्थिति में विनिमय

- प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा दिए गए डिजिटल भारत के संकल्प को साकार करते हुए गुजरात में डिजिटल कनेक्टिविटी मिशन तथा स्ट्रैटेजिक इनिशिएटिव्स को सुदृढ़ करने की नई दिशा मिलेगी
- मुख्यमंत्री तथा उप मुख्यमंत्री की दिसंबर-2025 में स्टारलिंक ऑपरेशन स्पेसएक्स की वाइस प्रेसिडेंट सुश्री लॉरेन ड्रेयर के साथ आयोजित प्रारंभिक बैठक की फलश्रुति
- राज्यव्यापी मॉडर्न डिजिटल इन्फ्रास्ट्रक्चर तथा सीमलेस कनेक्टिविटी सुनिश्चित करने के लिए संयुक्त कार्य समूह का गठन होगा

पायलट इनिशिएटिव्स अंतर्गत

- राज्य में कम टेलीकॉम नेटवर्क तथा कनेक्टिविटी की समस्या वाले सुदूरवर्ती एवं आदिजाति क्षेत्रों को ई-गवर्नेंस फैसिलिटी तथा कॉमन सर्विस सेंटर से जोड़कर सरकार की सेवाओं को तेजी तथा सरलता से पहुँचाने का आयोजन
- एस्पिरेशनल डिस्ट्रिक्ट सहित ट्राइबल क्षेत्रों में रिलायेबल डिजिटल सर्विस डिलीवरी सुनिश्चित की जाएगी
- प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्रों, विद्यालयों तथा राज्यव्यापी टेली-मेडिसीन सेंटर्स को स्मार्ट कनेक्टिविटी से जोड़कर सुदृढ़ व त्वरित स्वास्थ्य एवं शिक्षा सेवाएँ उपलब्ध कराने का आयोजन
- सरकारी एजेंसियों, विद्यालयों तथा आपदा प्रबंधन टीम की कैपिसिटी बिल्डिंग की जाएगी
- सरकारी विद्यालयों, पोर्ट फैसिलिटीज, वाइल्ड लाइफ सेंक्चुरी तथा सभी जिलों के आपदा प्रबंधन नियंत्रण कक्ष को जोड़ा जाएगा

जीएनएस)। गांधीनगर : प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने विकसित भारत@2047 के विजन को साकार करने में सुदृढ़ डिजिटल गवर्नेंस को अर्थव्यवस्था की रीढ़ की हड्डी बताया है। उनके द्वारा दिए गए डिजिटल भारत के संकल्प को गुजरात के ग्रामीण सुदूरवर्ती स्थलों सहित राज्यव्यापी विस्तृत करने की दिशा में गुजरात सरकार ने एक महत्वपूर्ण कदम उठाया है।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल के नेतृत्व में राज्य सरकार ने सोमवार को इस उद्देश्य से एलन मस्क की स्पेसएक्स की सब्सिडियरी स्टारलिंक सैटेलाइट कम्युनिकेशन्स प्राइवेट लिमिटेड के साथ आपसी सहयोग के आशय पत्र (एलओआई) का विनिमय किया।

इस एलओआई के परिणामस्वरूप राज्य में डिजिटल कनेक्टिविटी मिशन तथा रणनीतिक पहलों से सुदूरवर्ती, दूरदराजी तथा कम टेलीकॉम सुविधा और नेटवर्क की समस्या वाले क्षेत्रों में हाईस्पीड सैटेलाइट आधारित इंटरनेट कनेक्टिविटी उपलब्ध कराई जाएगी।

इस एलओआई अंतर्गत पायलट प्रोजेक्ट में कॉमन सर्विस सेंटर्स (सीएससी), ई-गवर्नेंस सुविधाओं, सरकारी विद्यालयों, जिला आपदा प्रबंधन नियंत्रण कक्ष, पोर्ट्स, वन्यजीव अभयारण्यों के क्षेत्रों को जोड़ने का आयोजन है।

यह एलओआई नर्मदा तथा दाहोद जैसे आकांक्षी जिलों सहित राज्य के आदिजाति जिलों में डिजिटल इन्क्लूजन (समावेशन) के लिए महत्वपूर्ण कदम बनेगा। इस एलओआई के क्रियान्वयन से इन

जिलों में पुलिस आउटपोस्ट्स, आपदा प्रबंधन केन्द्रों, वन्यजीव मॉनिटरिंग तथा कृषि अनुसंधान केन्द्रों के लिए मजबूत कनेक्टिविटी द्वारा सिक्योरिटी तथा स्टेबिलिटी बढ़ने के साथ रिलायेबल डिजिटल सर्विस डिलीवरी भी सुनिश्चित होगी। इस पहल अंतर्गत राज्य के स्कूलों में शिक्षा के लिए स्मार्ट कनेक्टिविटी तथा प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्रों (पीएचसी) में स्वास्थ्य सुख-सुविधा की सेवाएँ और टेली-मेडिसीन सुविधाएँ आसानी से एवं तेजी से उपलब्ध होंगी। साथ ही साथ; विभिन्न सरकारी एजेंसियों, विभागों, विद्यालयों और डिजास्टर रिस्पॉन्स टीम्स की कैपिसिटी बिल्डिंग के लिए भविष्य में संयुक्त प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन किया जाएगा। राज्य में सीमलेस तथा ईजी कनेक्टिविटी की आवश्यकताओं के संदर्भ में इस एलओआई के प्रभावी क्रियान्वयन के लिए राज्य सरकार तथा स्टारलिंक के प्रतिनिधियों के संयुक्त कार्य समूह का गठन किया जाएगा। मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल तथा उप मुख्यमंत्री श्री हर्ष संघवी की प्रेरक उपस्थिति में सोमवार को गांधीनगर में यह एलओआई विनिमय समारोह आयोजित किया गया। राज्य सरकार की ओर से उद्योग आयुक्त श्री पी. स्वरूप तथा स्टारलिंक की ओर से स्टारलिंक इंडिया के हेड श्री प्रभाकर जयकुमार ने इस एलओआई का परस्पर आदान-प्रदान किया।

इस अवसर पर मुख्यमंत्री ने विश्वास व्यक्त किया कि इस संयुक्त प्रोजेक्ट का क्रियान्वयन आगामी भविष्य में राज्य की डिजिटल सेवाओं को अधिक व्यापक बनाने में मील का पत्थर सिद्ध होगा और ई-गवर्नेंस की प्रगति को अधिक गति देगा।

इस एलओआई में राज्य के जीआईडीसी के इंडस्ट्रियल पार्क्स, हाईवे सेफ्टी सिस्टम्स, मैरीटाइम पोर्ट कनेक्टिविटी तथा कोस्टल पुलिस ऑपरेशन में भी कनेक्टिविटी अधिक मजबूत बनाने के विषयों को शामिल किया गया है। गुजरात सरकार तथा एलन मस्क की स्पेसएक्स की सब्सिडियरी स्टारलिंक के बीच आपसी सहयोग के एलओआई विनिमय समारोह में मुख्य सचिव श्री एम. के. दास, उद्योग विभाग की अपर मुख्य सचिव श्रीमती ममता वर्मा, मुख्यमंत्री के प्रधान सचिव श्री संजीव कुमार, मुख्यमंत्री के अपर प्रधान सचिव डॉ. विक्रांत पांडे, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग की सचिव श्रीमती पी. भारती, मुख्यमंत्री के सचिव डॉ. अजय कुमार तथा राज्य सरकार एवं स्टारलिंक के वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित रहे।

कच्छ को बड़ी रेल सौगातः गांधीधाम–आदिपुर चौहरीकरण व 'वाई' कनेक्टिविटी कार्य पूर्ण, रेल संरक्षा आयुक्त ने किया ट्रॉली निरीक्षण

जीएनएस)। अहमदाबाद मंडल अपने रेल नेटवर्क को अधिक सक्षम, सुरक्षित तथा भविष्य की आवश्यकताओं के अनुरूप विकसित करने के लिए निरंतर प्रयासरत है। इसी क्रम में गुजरात के गांधीधाम–आदिपुर रेलखंड के बीच चौहरीकरण तथा आदिपुर स्टेशन पर 'वाई' कनेक्टिविटी का महत्वपूर्ण कार्य सफलतापूर्वक पूर्ण कर लिया गया है। इस खंड का 9 फरवरी 2026 को श्री ई. श्रीनिवास, रेल संरक्षा आयुक्त (CRS), पश्चिम सर्कल द्वारा ट्रॉली निरीक्षण किया गया।

निरीक्षण टीम में मंडल रेल प्रबंधक अहमदाबाद श्री वेद प्रकाश, मुख्य प्रशासनिक अधिकारी (निर्माण) श्री प्रदीप गुप्ता, मुख्य ट्रैक इंजीनियर, मुख्य परिचालन प्रबंधक (जी) तथा निर्माण एवं ओपन लाइन विभाग के वरिष्ठ अधिकारी शामिल थे।

इस परियोजना के अंतर्गत 17 किमी ट्रैक लिंकिंग, 8 छोटे पुलों का निर्माण तथा 2.60 लाख घन मीटर अर्थवर्क किया गया है। आदिपुर स्टेशन पर सिग्नल एवं दूरसंचार (S&T) तथा ऑपरेटिंग कंट्रोल बिल्डिंग का निर्माण किया गया है और चौथी लाइन सहित पूरे सेक्शन का विद्युतीकरण पूर्ण हुआ है। गोपालपुर स्टेशन को आधुनिक स्टेशन के रूप में विकसित किया गया है। गांधीधाम बी केबिन में 16 नए प्वाइंट्स एवं क्रॉसिंग तथा आदिपुर स्टेशन पर 21 नए प्वाइंट्स एवं क्रॉसिंग के साथ 1 लूप लाइन सहित प्रमुख यार्ड रीमॉडलिंग कार्य किए गए हैं।

गांधीधाम–आदिपुर ब्रॉडगेज रेलखंड कांडला एवं मुंद्रा बंदरगाहों सहित भुज, वायोर और अन्य क्षेत्रों को देश के विभिन्न भागों से जोड़ने वाला एक अत्यंत महत्वपूर्ण माल ढुलाई मार्ग है। वर्तमान में यह खंड अत्यधिक व्यस्त रहने से परिचालन पर दबाव बना रहता है, जिसे कम करने के लिए दो अतिरिक्त लाइनों की आवश्यकता महसूस की जा रही थी। इस मार्ग से नमक एवं सामान्य माल की भी बड़े पैमाने पर ढुलाई होती है और मुंद्रा बंदरगाह की बढ़ती

क्षमता को देखते हुए भविष्य में यातायात और बढ़ने की संभावना है।

यह खंड अहमदाबाद मंडल का सर्वाधिक GMT (Gross Million Tonnes) लोडिंग वाला सेक्शन है, जहाँ से प्रतिवर्ष 70 से अधिक GMT लोडिंग होती है। चौहरीकरण से लाइन क्षमता में वृद्धि होगी, जिससे ट्रेनों का संचालन अधिक सुरक्षित, समयनिष्ठ एवं सुचारु बनेगा। इससे यात्री ट्रेनों की समयपालनता में सुधार होगा, पीक समय में परिचालन आसान होगा तथा नई ट्रेनों या अतिरिक्त फेरों की संभावनाएँ बढ़ेंगी।

गोपालपुर नए स्टेशन के निर्माण से अहमदाबाद की ओर से आने वाली गाड़ियों को भुज जाने के लिए गांधीधाम में इंजन रिवर्सल की आवश्यकता नहीं होगी, जिससे लगभग 20-25 मिनट की समय बचत होगी। आदिपुर स्टेशन पर 'वाई' कनेक्टिविटी उपलब्ध होने से ट्रेनों को दिशा परिवर्तन नहीं करना पड़ेगा, जिससे समय एवं ईंधन दोनों की बचत होगी और परिचालन सरल बनेगा।

इस परियोजना से कांडला एवं मुंद्रा बंदरगाहों से जुड़े कंटेनर, पेट्रोलियम, उर्वरक, खाद्यान्न एवं अन्य माल के परिवहन में तेजी आएगी। मालगाड़ियों का टर्नअराउंड समय कम होगा, वैगनों का बेहतर उपयोग संभव होगा तथा लॉजिस्टिक लागत में कमी आएगी, जिससे उद्योगों और व्यापार को सीधा लाभ मिलेगा। साथ ही यह परियोजना कच्छ क्षेत्र के औद्योगिक विकास को गति देने, व्यापार, पर्यटन एवं रोजगार के अवसर बढ़ाने तथा निवेश के अनुकूल वातावरण बनाने में सहायक सिद्ध होगी।

गांधीधाम–आदिपुर चौहरीकरण एवं 'वाई' कनेक्टिविटी परियोजना क्षेत्रीय विकास और सुदृढ़ रेल अवसंरचना की दिशा में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है, जो कच्छ क्षेत्र के सामाजिक–आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण योगदान देगी।